डाक पंजीकरण संख्या : Jaipur City/414/2022-24

RNI No.- RAJHIN/2013/52435

राजस्थान की आवाज ...

हिन्दी मासिक पत्रिका

राजस्थान दर्शन

राजस्थान । गुजरात । महाराष्ट्र से एक साथ प्रसारित

वर्ष 14, अंक -03, जयपुर, सितंबर 2026, मूल्य 45/- प्रति, वार्षिक शुल्क 540/- प्रति, पृ.सं. 40

राजस्थान में निकाय चुनाव 2026

जन सेवा का संकल्प

SHAMBHU'S
COFFEE BAR
27 SAAL SE
GURARAT
KA TRUSTED
COFFEE BRAND
50 + Outlets Across
India And Canada
SHAMBHU'S
Shambhu's
COFFEE BAR
SHAMBHU'S
H.L, Devangan Flats, 1-2, Commerce College Rd,
New Commercial Mills Staff Society, Navrangpura,
Ahmedabad, Gurarat 380006
M: +91 70980 40652 | www.shambhuscoffeebar.com

राजस्थान की आवाज...

राजस्थान दर्शन

राजस्थान । गुजरात । महाराष्ट्र से प्रसारित

हिन्दी मासिक पत्रिका

वर्ष : 14। अंक : 03 । जयपुर, सितंबर 2026 । मूल्य 45/-रुपए प्रति । वार्षिक शुल्क 540/-रुपए प्रति । पृ.सं. 40

निकाय चुनाव में Zen-Z पर बड़ा दाव... 5

पांच राज्यों की 6 सीटों पर उपचुनाव का ऐलान

सम्पादकीय मण्डल

प्रधान संपादक
घीसूसिंह चुण्डावत

संपादक
कमलेश सिंह चुण्डावत

सलाहकार मण्डल

जोगाराम कुमावत (केबीनेट मंत्री)
मदन दिलावर (शिक्षा मंत्री)
गोवर्धनभाई पुरोहित
श्री शम्भुसिंह चौहान
मदन सिंह चौहान
उदयसिंह राजपूत
भूपेन्द्र कुमार प्रजापति
जती भगाबाबा महाराज
नारायणसिंह खुडाला

बिजनेस हेड

भवानी सिंह राजपुरोहित (अहमदाबाद)
राकेश गुप्ता (जयपुर)
अमित कुमार चेचानी
मो. 9099111111
प्रमोद परिहार (सूरत)

एडिटोरियल कंसल्टेंट

राव जागृति सिंह
पुखराज सीरवी, नारलाई

विधि सलाहकार

शीतलप्रसाद राव जयपुर, मांगीलाल सीरवी जयपुर, गणेश बोराणा शिवगंज

डेस्क - कमलेश सिंह

डिजाइन - दीपक कुमार
गोविन्द सिंह धोनी

डिस्ट्रीब्यूटर -
विनोद बुक एजेन्सी,
खानपुर, अहमदाबाद।
सूरत बुक स्टॉल, भागल, सूरत,
राजस्थान राव पब्लिकेशन, जयपुर

राजस्थान दर्शन में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, इनमें संस्थापक-प्रकाशन का सहमत होना आवश्यक नहीं है। सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र जयपुर होगा।

पत्रिका में प्रकाशित किए गए लेखों में फोटो फाइल फोटो है

- : सम्पादकीय कार्यालय : -

ए-11, प्रथम मंजिल, करधनी शोपिंग सेन्टर, हरि मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर फोन.: 0141-2521000
E-mail : rajasthandarshanpatrika@gmail.com Website: www.rajasthandarshanpatrika.com
स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, संस्थापक, स्वामी राव संजयसिंह की ओर से मुद्रक नागर प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनर्स, वर्क्स-A/F26, औद्योगिक क्षेत्र, करतारपुरा विस्तार, करतारपुरा, जयपुर (राज.) से मुद्रित एवं A-11, प्रथम मंजिल करधनी शॉपिंग सेन्टर,हरिमार्ग, मालवीय नगर, जयपुर-17 से प्रकाशित।
सम्पादक कमलेशसिंह चुण्डावत, एच-6, नंदपुरी कॉलोनी, मालवीय नगर,जयपुर-17
(पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए उत्तरदायी)

सम्पर्क : 9166693566, 9413840652, 9588246740

संपादकीय...

निकाय चुनाव तय करेंगे राजनीति की नई दिशा....

राजस्थान के निकाय चुनाव-2026 केवल नगर निगम, नगर परिषद और नगर पालिकाओं के प्रतिनिधियों के चुनाव भर नहीं हैं, बल्कि राज्य की राजनीति की नई दिशा तय करने वाले चुनाव भी हैं। दो चरणों में हो रहे इन चुनावों पर पूरे प्रदेश की निगाहें टिकी हैं, क्योंकि इनके नतीजे आगामी विधानसभा चुनावों की राजनीतिक भूमिका तैयार करेंगे। पहले चरण में बड़ी संख्या में वार्डों और लाखों मतदाताओं के बीच मुकाबला हो रहा है, जबकि प्रमुख राजनीतिक दलों ने इसे प्रतिष्ठा का प्रश्न बना लिया है।

सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के लिए यह चुनाव सरकार के कामकाज पर जनता की मुहर हासिल करने का अवसर है। पार्टी ने निकाय चुनाव को विधानसभा चुनाव जैसी गंभीरता से लिया है। विकास, स्वच्छता, पेयजल, सड़क, डिजिटल सेवाओं और शहरी आधारभूत सुविधाओं को प्रमुख मुद्दा बनाते हुए संकल्प पत्र जारी किया गया है। संगठन स्तर पर भी पूरी ताकत झोंक दी गई है, ताकि अधिक से अधिक निकायों में भाजपा का बोर्ड बन सके। यह स्पष्ट करता है कि भाजपा इन चुनावों को केवल स्थानीय सत्ता तक सीमित नहीं मान रही, बल्कि इसे अपने जनाधार के विस्तार का माध्यम समझ रही है।

दूसरी ओर कांग्रेस के सामने अपनी खोई हुई शहरी जमीन वापस पाने की चुनौती है। पार्टी ने अपने घोषणा पत्र में मुफ्त डोर-टू-डोर कचरा संग्रहण, सस्ती दरों पर भूमि पट्टे, सीवरेज व्यवस्था के विस्तार और सफाईकर्मियों की नियमित भर्ती जैसे वादे किए हैं। कांग्रेस भाजपा सरकार पर शहरी निकायों की उपेक्षा और संसाधनों के असमान वितरण का आरोप लगाकर जनता के बीच अपनी बात रखने का प्रयास कर रही है। यदि कांग्रेस स्थानीय असंतोष को राजनीतिक समर्थन में बदलने में सफल रहती है, तो चुनावी तस्वीर रोचक हो सकती है।

इन चुनावों की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता जेन-जी यानी नई युवा पीढ़ी की बढ़ती भागीदारी है। बड़ी संख्या में युवा पहली बार पार्षद पद के लिए मैदान में हैं। यह पीढ़ी सोशल मीडिया, डिजिटल प्रचार और स्थानीय मुद्दों पर सीधे संवाद को प्राथमिकता दे रही है। रोजगार, स्वच्छ शहर, बेहतर यातायात, पर्यावरण संरक्षण और तकनीक आधारित प्रशासन जैसे विषय युवाओं के एजेंडे में प्रमुख हैं। इससे संकेत मिलता है कि राजनीति में केवल चेहरे ही नहीं, बल्कि कार्यशैली भी बदल रही है। यदि इन युवाओं को जनता का समर्थन मिलता है, तो स्थानीय शासन में नई सोच और नवाचार को बढ़ावा मिल सकता है।

हालांकि चुनावी मुकाबला इतना आसान नहीं है। टिकट वितरण के बाद कई स्थानों पर दोनों प्रमुख दलों के असंतुष्ट नेता निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में मैदान में उतर गए हैं। इसके अलावा क्षेत्रीय दल और छोटे राजनीतिक संगठन भी कई वार्डों में मुकाबले को त्रिकोणीय बना रहे हैं। ऐसे में भाजपा और कांग्रेस दोनों को अपने पारंपरिक वोट बैंक के साथ-साथ स्थानीय समीकरणों पर भी विशेष ध्यान देना होगा।

निकाय चुनावों का सबसे महत्वपूर्ण पहलू यह है कि इनका सीधा संबंध नागरिक जीवन से है। शहरों की सफाई, पेयजल, सड़क, स्ट्रीट लाइट, पार्क, यातायात और ठोस कचरा प्रबंधन जैसे विषय नगर निकायों की जिम्मेदारी हैं। इसलिए मतदाताओं को केवल राजनीतिक नारों के बजाय उम्मीदवारों की कार्यक्षमता, ईमानदारी और स्थानीय समस्याओं के समाधान की क्षमता को प्राथमिकता देनी चाहिए। मजबूत स्थानीय निकाय ही बेहतर शहरी विकास की नींव बन सकते हैं।

अंततः राजस्थान के निकाय चुनाव-2026 तीन स्तरों की परीक्षा हैं। भाजपा के लिए यह शासन की स्वीकार्यता की कसौटी है, कांग्रेस के लिए राजनीतिक पुनरुत्थान का अवसर और जेन-जी के लिए नेतृत्व स्थापित करने का मंच। लोकतंत्र की वास्तविक सफलता तब होगी जब चुनाव विकास, पारदर्शिता और जवाबदेही के मुद्दों पर लड़े जाएं तथा जनता ऐसे प्रतिनिधियों का चयन करे जो शहरों की समस्याओं का स्थायी समाधान देने की क्षमता रखते हों। इन चुनावों का संदेश केवल स्थानीय निकायों तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि राजस्थान की भविष्य की राजनीति की दिशा भी तय करेगा।

आपका-

प्रधान संपादक-घीसू सिंह चुण्डावत

राजस्थान में 2 चरण में होंगे निकाय चुनाव

9 और 11 सितंबर को वोटिंग, 14 सितंबर को रिजल्ट; पहली बार सभी निकायों में एक साथ चुनाव

राजस्थान में 309 नगरीय निकायों के चुनावों की घोषणा हो गई है। राज्य निर्वाचन आयोग दो चरणों में शहरों में चुनाव कराएगा। पहले चरण में 9 सितंबर और दूसरे चरण में 11 सितंबर को वोटिंग होगी और 14 सितंबर को रिजल्ट आएंगे। राजस्थान के इतिहास में पहली बार सभी नगरीय निकायों में एक साथ चुनाव हो रहे हैं। गौरतलब है कि राज्य सरकार ने एक देश-एक चुनाव की तर्ज पर एक प्रदेश-एक चुनाव कराने की घोषणा की थी।

राज्य निर्वाचन आयुक्त राजेश्वर सिंह ने कहा- निकाय प्रमुखों (मेयर, सभापति और नगर पालिका अध्यक्ष) का चुनाव 21 सितंबर को होगा, जबकि उपाध्यक्ष का चुनाव 22 सितंबर को होगा। इसी दिन नगर निगम, नगर परिषदों और नगरपालिकाओं की साधारण सभा की बैठक होगी, उसी बैठक में डिप्टी मेयर, उपसभापति, नगरपालिका उपाध्यक्ष के चुनाव होंगे।

10 नगर निगम में वोटिंग कब

तारीख	नगर निगम
9 सितंबर	भीलवाड़ा, भरतपुर, अलवर, पाली
11 सितंबर	जयपुर, अजमेर, बीकानेर, जोधपुर, कोटा, उदयपुर

जानें- कौनसी नगर परिषद में वोटिंग कब

तारीख	नगर परिषद
9 सितंबर	नागौर, ब्यावर, कोटपूतली, चूरू, सुजानगढ़, धौलपुर, सवाई माधोपुर, शाहपुरा, चौमूं, जालोर, बारां, बूंदी, झालावाड़, बांसवाड़ा, चित्तौड़गढ़, प्रतापगढ़, डूंगरपुर, डीडवाना, कुचामनसिटी, करौली, भिवाड़ी, खैरथल, तिजारा, जैसलमेर, बाड़मेर
11 सितंबर	किशनगढ़, पुष्कर, टोंक, बहरोड़, श्रीगंगानगर ,हनुमानगढ़, सरदारशहर, गंगापुरसिटी, सीकर, फतेहपुर, झुंझुनूं, सिरोही, निंबाहेड़ा, राजसमंद, मकराना, हिंडौनसिटी, दौसा, लालसोट, डीग, बालोतरा, फलोदी, सलूंबर

निकाय चुनाव के लिए बीजेपी का संकल्प पत्र जारी

राजस्थान में 1 लाख लोगों को प्लॉट देगी सरकार: 24 घंटे शहरों में मिलेगी बिजली

राजस्थान में निकाय चुनावों के लिए बीजेपी ने संकल्प पत्र जारी किया है। बीजेपी मुख्यालय पर प्रदेशाध्यक्ष मदन राठौड़, सीएम भजनलाल शर्मा और वरिष्ठ नेताओं की मौजूदगी में संकल्प पत्र का विमोचन किया।

बीजेपी ने वादा किया कि प्रत्येक निकाय में वार्ड ही विकास का आधार हो, इसे ध्यान में रखते हुए शहर के चहुंमुखी विकास किया जाएगा। प्रभावित निकायों में पेयजल आपूर्ति में सुधार किया जाएगा और 24 घंटे घरेलू बिजली सप्लाई की जाएगी।

घोषणा पत्र तो घोषणा करने का होता है, संकल्प पत्र काम करने का

सीएम भजनलाल शर्मा ने कहा- हमने आज 'नगरीय विकास संकल्प पत्र' जारी किया है, क्योंकि घोषणा पत्र तो घोषणा करने का होता है, संकल्प पत्र काम करने का होता है। शहरों में विकास कैसे हो, इसे लेकर हम 5 साल का संकल्प पत्र राजस्थान की जनता के बीच में लेकर आए हैं।

सीएम भजनलाल शर्मा ने कहा- जब मैंने विधानसभा में कहा था कि हम 'वन स्टेट वन इलेक्शन' कराएंगे, तब कांग्रेस के एक बड़े नेता ने कहा था कि आपके काका जी भी नहीं करा सकते हैं। वह खुद ही देख लें कि वन स्टेट वन इलेक्शन कौन से काका जी करवा रहे हैं।

राठौड़ बोले- हम जो कहते हैं, वह करते हैं

मदन राठौड़ ने कहा- सीएम भजनलाल शर्मा की गारंटी पर जनता विश्वास करती है। आज हमने शहरी निकायों का घोषणा पत्र जारी किया है। हम जो कहते हैं, वह करते हैं। हम इस घोषणा पत्र को पूरा करने के लिए दृढ़ संकल्पित हैं। पहले किसने क्या कहा और क्या किया और हमने क्या कहा और क्या किया। वह सब जनता जानती है और समझती भी हैं। आप सब जानते हैं कि पिछली सरकारों ने 5 साल में जो काम किया। उससे ज्यादा काम हमारे मुख्यमंत्री ने 2 साल में करके दिखा दिए। यह सब जनता ने देखा है और जनता ने इसे समझती भी है।

13 सदस्यों ने एक महीने में तैयार किया घोषणा पत्र

बीजेपी ने 2 अगस्त को चुनाव घोषणा पत्र समिति का गठन किया था। इस समिति में राज्यसभा सांसद घनश्याम तिवाड़ी, पूर्व सांसद संतोष अहलावत, राजेंद्र कुमार गहलोत, प्रदेश महामंत्री श्रवण सिंह बगड़ी, पूर्व विधायक मोहनलाल गुप्ता, पूर्व महापौर सौम्या गुर्जर सहित 13 सदस्यों को शामिल किया गया था। इस समिति ने 30 दिन में संकल्प पत्र तैयार किया है।

शहरी लोगों के लिए गारंटी

आवासीय भूखंड

अगले 5 साल में शहरी क्षेत्र के अलग-अलग आय वर्ग के लोगों के लिए एक लाख आवासीय प्लॉट आवंटित किए जाएंगे।

घरेलू पीएनजी

आगामी 5 सालों में 7 लाख से ज्यादा घरों में रसोई गैस (PNG) के कनेक्शन उपलब्ध कराए जाएंगे।

पिंक टॉयलेट्स

राज्य के सभी शहरी क्षेत्रों के लिए महिलाओं की सुविधा के लिए 2000 पिंक टॉयलेट्स का निर्माण कराया जाएगा।

स्ट्रीट लाइट

हर निकाय में, नए और बाहरी रिहायशी इलाकों में 15 लाख स्ट्रीट लाइटें लगाई जाएगी।

वरिष्ठ नागरिक सेवा केंद्र

बुजुर्गों को सम्मानजनक और अच्छी दिनचर्या देने के लिए सामुदायिक केंद्रों पर जन सहभागिता से प्रथम चरण में संभागीय एवं परिषदों में "वरिष्ठ नागरिक सेवा केंद्रों" की स्थापना की जाएगी। शेष निकायों में चरणबद्ध रूप से केंद्र स्थापित किए जाएंगे।

विक्रेताओं और चालकों का बीमा

हर निकाय में, पंजीकृत स्ट्रीट वेंडर्स, सीएनजी ऑटो चालकों और टैक्सी चालकों को प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना के तहत बीमा कवर किया जाएगा।

फूड कोर्ट स्थापित किए जाएंगे

वेंडिंग जोन:

हर निकाय में, स्ट्रीट वेंडर्स (रेहड़ी-पटरी वालों) के लिए अलग से आधुनिक सुविधाओं युक्त वेंडिंग जोन निर्धारित किया जाएगा।

पार्किंग स्थल:

हर निकाय क्षेत्र में आवश्यकता अनुसार पार्किंग स्थल विकसित किए जाएंगे।

फूड कोर्ट:

लोगों को साफ-सुथरा, शुद्ध और पौष्टिक खाना देने के लिए नगर निगम एवं नगर परिषदों में फूड कोर्ट स्थापित करने का काम किया जाएगा।

कचरा मुक्त शहर:

हर निकाय में, सभी डंपिंग साइट्स पर सालों से जमा पुराने कचरे का 100% वैज्ञानिक तरीके से निस्तारण करने का काम किया जाएगा।

कचरा वाहनों की ट्रेकिंग:

घर-घर जाकर कचरा उठाने वाली सभी गाड़ियों पर व्हीकल ट्रैकिंग सिस्टम लगाने का काम किया जाएगा

सीवरेज व्यवस्था:

अगले 5 सालों में 3,000 किलोमीटर पुरानी सीवर लाइन की मरम्मत करने का काम किया जाएगा।

निराश्रित पशुओं के लिए शेल्टर होम:

सभी शहरी निकायों में विभिन्न संस्थाओं के माध्यम से जनभागीदारी द्वारा शेल्टर होम स्थापित किए जाएंगे। जमीन सरकार देगी।

LED लाइट्स :

सभी निकाय क्षेत्रों में हर वार्ड तक एलईडी लाइट्स की व्यवस्था की जाएगी।

मल्टी स्टोरी पार्किंग बनेंगी

भूमि अभिलेख रिकॉर्ड:

नेशनल जियोस्पेशियल नॉलेज बेस्ड लैंड सर्वे ऑफ अर्बन हैबिटेशन्स (NAKSHA) योजना के तहत भरोसेमंद और कानूनी रूप से प्रमाणित भूमि रिकॉर्ड तैयार किया जाएगा।

जमीन संबंधी समस्याओं का निवारण:

परिधीय क्षेत्र में रहने वाले लोगों की जमीन से जुड़ी समस्याओं के निवारण के लिए जरूरी प्रावधान किए जाएंगे।

ट्रैफिक और पार्किंग नीति:

आमजन की इस समस्या के समाधान के लिए नीति बनाई जाएगी। जिसमें सिग्नल लेस व्यवस्था, अंडरपास, ब्रिज, भीड़भाड़ क्षेत्रों में मल्टी स्टोरी पार्किंग/सामूहिक पार्किंग के इंतजाम किए जाएंगे।

बिजली लाइन भूमिगत करना:

घनी आबादी वाले क्षेत्रों में बिजली की हाईटेंशन (HT) लाइनों को चरणबद्ध तरीके से भूमिगत किया जाएगा।

रिंग रोड:

शहरों में ट्रैफिक के दबाव और जाम को कम करने के लिए रिंग रोड बनाई जाएगी।

वाटर हार्वेस्टिंग:

शहरी निकायों के प्रमुख पार्क और अन्य स्थानों, जहां पानी इकट्ठा होता है, वहां वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम लगाया जाएगा। इससे बरसात के पानी को एकत्र किया जा सके और भू-जल स्तर को बढ़ाया जा सके।

खराब सड़कों और सीवरेज लाइनों की जांच होगी

कचरा और अपशिष्ट जल प्रबंधन:

प्राइवेट पार्टनरशिप (निजी सहभागिता) से सॉलिड वेस्ट प्रोसेसिंग प्लांट और वेस्ट वाटर मैनेजमेंट सिस्टम लगाए जाएंगे, जिससे खाद बने और साफ किए गए पानी का इस्तेमाल उद्योगों और खेती में हो सके।

बिना खुदाई सड़क मरम्मत:

सभी नगर निगमों में सीसीटीवी सर्वे के जरिए खराब सड़कों और सीवरेज लाइनों की जांच की जाएगी। बिना सड़क खोदे आधुनिक ट्रेंचलेस तकनीक से उन्हें ठीक किया जाएगा।

रोबोटिक सीवरेज सफाई:

सीवरेज और मैनहोल की सफाई के दौरान होने वाले हादसों को रोकने के लिए अत्याधुनिक रोबोटिक 3-इन-1 सफाई मशीनों और डिजिटल उपकरण शहरी निकायों को उपलब्ध कराए जाएंगे।

अटल रोजगार मेले और ई-लाइब्रेरी:

युवाओं के लिए आवश्यकता के आधार पर ई-लाइब्रेरी की व्यवस्था और रोजगार मेलों का आयोजन होगा।

नगर निगमों में इंटर्नशिप:

युवाओं को निकाय प्रशासन से जोड़ने के लिए इंटर्नशिप की व्यवस्था लागू की जाएगी।

शहरों में ईवी चार्जिंग पॉइंट्स बनाए जाएंगे

ईवी चार्जिंग पॉइंट्स:
ई-बिड के माध्यम से होर्डिंग/यूनिपोल की तर्ज पर ईवी चार्जिंग पॉइंट्स बनाए जाएंगे।

हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर:
प्राथमिक और सामुदायिक चिकित्सा केंद्रों को आधुनिक हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर के रूप में विकमित किया जाएगा।

सफाई कर्मियों एवं अन्य पदों की भर्ती:
योजनाबद्ध तरीके से भर्ती सुनिश्चित की जाएगी।

ई-बसें :
सभी नगर निगम क्षेत्रों में ई-बसों के माध्यम सें सार्बजनिक परिवहन व्यवस्था शुरू की जाएगी। महिलाओं और सीनियर सिटीजन का विशेष ध्यान रखा जाएगा।

प्रदूषण नियंत्रण:
NCAP और NCR के तहत आने वाले शहरों में पॉल्यूशन रोकने के लिए स्मॉग टॉवर और एंटी-स्मॉग गन उपलब्ध कराई जाएगी।

AI सुरक्षा तकनीक:
बेहतर ट्रैफिक मैनेजमेंट और सुरक्षा के लिए सभी अभय कमांड सेंटर्स को AI तकनीक से जोड़ा जाएगा।

सोलर प्लांट:
पीएम सूर्यघर योजना के तहत घरों की छतों पर सोलर प्लांट लगवाए जाएंगे।

आधारभूत सुविधाओं का विकास:
सीमा विस्तार वाले नगर निकायों में जुड़े गांवों में सीवरेज, पानी, कचरा संग्रहण और निस्तारण के साथ ही रोड, रोड लाइट और बिजली की व्यवस्था की जाएगी।

ट्रैफिक लाइट फ्री सड़कें:
ट्रैफिक को सुचारू रूप से चलाने के उद्देश्य से मुख्य सड़कों और चौराहों को ट्रैफिक लाइट फ्री बनाने के लिए काम होगा।

डिस्टर्ब एरिया एक्ट:
चुनिंदा शहरों में आवश्यकता अनुसार डिस्टर्ब एरिया एक्ट लागू करने का काम किया जाएगा।

5 नगर निगम में कांग्रेस ने 49, भाजपा ने 21-GenZ-प्रत्याशी उतारे

दोनों पार्टियों ने 510 वार्डों में 13.72 प्रतिशत युवा उम्मीदवारों को दिए टिकट

राजस्थान में नगर निगम चुनाव में भाजपा और कांग्रेस ने अनुभवी चेहरों के साथ जेन-जी को भी मैदान में उतारा है। जयपुर, जोधपुर, उदयपुर, अजमेर और कोटा में कांग्रेस ने जहां 49 GenZ प्रत्याशी बनाए हैं। वहीं भाजपा ने 21 त्दट्टुं को टिकट दिया है।

जयपुर में 18 जेन जी उम्मीदवार

जयपुर में भाजपा ने 6 GenZ उम्मीदवारों को टिकट दिया है। हीं कांग्रेस ने 12 प्रत्याशियों को मैदान में उतारा है। जोधपुर में बीजेपी ने 7 GenZ को चुनावी मैदान में उतारा है। कांग्रेस ने 10 GenZ को टिकट दिया है।

उदयपुर में नगर निगम चुनाव में कांग्रेस ने 6 और बीजेपी ने 2 प्रत्याशियों का नामांकन करवाया है। अजमेर में भाजपा ने 4 और कांग्रेस ने 5 GenZ को प्रत्याशी बनाया है। कोटा में दोनों पार्टियों ने कुल 18 GenZ प्रत्याशी बनाए हैं। इनमें कांग्रेस ने 16 और भाजपा ने 2 को उम्मीदवार बनाया है।

इन पांच शहरों में कुल 510 वार्डों में कांग्रेस और भाजपा ने 70 GenZ प्रत्याशी चुनावी मैदान में उतारे हैं। ऐसे में 13.72 प्रतिशत GenZ प्रत्याशी हैं। इनकी आयु 21 से लेकर 29 साल के बीच है। यह डाटा उम्मीदवारों के अब तक अपलोड की गई लिस्ट के हिसाब से है।

जयपुर में दोनों पार्टियों में 21 साल की सबसे कम उम्र की युवा:
जयपुर नगर निगम चुनाव में 150 वार्डों के लिए नामांकन प्रक्रिया पूरी हो चुकी है। प्रमुख पार्टियों की ओर से जारी किए अधिकृत प्रत्याशियों में इस बार बीजेपी के मुकाबले कांग्रेस ने Gen-Z को ज्यादा टिकट दिया है। जबकि बुजुर्ग उम्मीदवारों (60 साल या उससे ज्यादा उम्र के) में भी कांग्रेस ने बीजेपी की तुलना में ज्यादा प्रत्याशी उतारे हैं।

शालु मीणा

पलक यादव

सरस्वती प्रजापत
कांग्रेस (21)

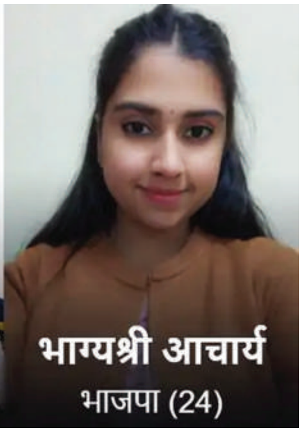
भाग्यश्री आचार्य
भाजपा (24)

बीजेपी ने 6 Gen-Z उम्मीदवार उतारे हैं। वार्ड 150 से शालू मीणा (23), वार्ड 119 से यश राणावत (22), वार्ड 10 से पलक यादव (21), वार्ड 143 से निधि जैन (29), वार्ड 115 से सूरज गोडीवाल (29), वार्ड 63 से अजय टेपण (29) उम्मीदवार हैं।

वहीं कांग्रेस ने अपने 150 प्रत्याशियों में 12 Gen-Z को टिकट दिया है। इनमें सबसे कम उम्र के प्रत्याशी वार्ड 71 से फैज हसन (21) हैं। इसके अलावा वार्ड कांग्रेस 128 से मोहम्मद सोहेल मंसूरी (27), वार्ड 95 से मानवेन्द्र सिंह (22), वार्ड 88 से श्रुति भारद्वाज (26), वार्ड 72 सुमन भाटी (22), वार्ड 46 से हर्षिता जैन (23), वार्ड 18 से वंदिता शर्मा (27), वार्ड 1 से नवरत्न शर्मा (28), वार्ड 13 से धनराज सैनी (29), वार्ड 55 से संजय बड़ोदिया (28), वार्ड 137 से सलमान मंसूरी (29) और वार्ड 148 से आशा सैनी (28) को उम्मीदवार बनाया है।

बीजेपी में श्रवण बोहरा सबसे उम्रदराज प्रत्याशी

बीजेपी ने 150 सीटों में से 10 सीटे ऐसी हैं, जहां बुजुर्ग (60 या उसे ज्यादा उम्र) प्रत्याशी मैदान में उतारे हैं। इसमें सबसे उम्रदराज प्रत्याशी वार्ड 1 से श्रवण बोहरा (66) हैं। इसके अलावा वार्ड 16 से महेश कुमार संघी (62), वार्ड 17 से सुमेर सिंह जोधा (65), वार्ड 35 से विमल कटियार (60), वार्ड 42 से अशोक रावतानी (65), वार्ड 43 से शैलेन्द्र भार्गव (65), वार्ड 66 से नारायण लाल नैनावत (62), वार्ड 74 से रामपाल जैन (60), वार्ड 98 से सुभाष सिंघी (63) और वार्ड 112 से सुनील कोठारी (63) को मैदान में उतारा है।

कांग्रेस में बिवाल सबसे उम्रदराज प्रत्याशी

कांग्रेस ने युवाओं के साथ-साथ बुजुर्ग प्रत्याशियों को भी मैदान में उतारा है। कांग्रेस ने 13 प्रत्याशी ऐसे उतारे हैं, जो 60 साल या उससे ज्यादा उम्र के हैं। सबसे उम्रदराज प्रत्याशी वार्ड 115 से सुरेश बिवाल (67) हैं। इसके अलावा वार्ड 9 कैलाशी देवी (61), वार्ड 15 से बद्री कुमावत (66), वार्ड 31 से जयकुमार जैन (63), वार्ड 35 से अनिल (63), वार्ड नं. 51 से मनमोहन गुर्जर (64), वार्ड नं. 58 से रामप्यारी देवी (60), वार्ड नं. 64 कैलाश मीणा (60), वार्ड 76 से प्रदीप जैन (65), वार्ड 82 से महेश यादव (61), वार्ड 100 से विनीत कूलवाल (62), वार्ड 118 से सुनीता मावर (66) और वार्ड 145 से अर्चन चतुर्वेदी (61) को उतारा है।

जोधपुरः भाजपा-कांग्रेस से 17 जेन जी लड़ेंगे पार्षद का चुनाव, 5-कुंवारे

जोधपुर में इस बार 17 जेनजी चुनावी मैदान में हैं। कांग्रेस ने सबसे कम उम्र 21 साल की प्रत्याशी सरस्वती को वार्ड नंबर 51 से प्रत्याशी बनाया है। सरस्वती की साल 2025 में ग्रेजुएशन पूरी हुई थी और अब भी वह पढ़ाई

कर रही हैं। इसी तरह भाजपा ने भी वार्ड नंबर 24 से एमए स्टूडेंट भाग्यश्री को पहली बार टिकट देकर पार्षद बनने का मौका दिया है। खास बात ये है कि इन 17 जेनजी में 5 कुंवारे भी हैं। एक वार्ड ऐसा भी है, जहां कांग्रेस के 27 साल के कैंडिडेट के सामने बीजेपी के 66 साल के सीनियर नेता हैं।

बीजेपी ने 7 और कांग्रेस ने 11 जेन जी को दिया मौका: बीजेपी ने 7 जेन जी को चुनावी मैदान में उतारा है। इनमें दो प्रत्याशी संजू कंवर और भाग्यश्री आचार्य हैं, जिनकी उम्र 24 साल है। मनीष चौधरी 27 साल के हैं। असीम अकरम (28) और स्वीटी चावड़ा (28) और निकिता गहलोत (29) और पूजा सोनी (29) को टिकट दिया गया है। वहीं कांग्रेस ने सायना बानो (24), सोनिया (24), नसीम बानो (25), आनंद राठी (27), मोहम्मद दानिश (27), सोमेश्वर गुर्जर (28), मूमल प्रजापति (29), सिद्धार्थ मेहरा (29) और योगेश्वरी (29) को टिकट दिया है।

उदयपुर: बीजेपी-कांग्रेस से 8 Gen-Z लड़ेंगे पार्षद चुनाव; स्वयंसेविका से लेकर लॉ स्टूडेंट मैदान में

उदयपुर नगर निगम चुनाव में BJP और कांग्रेस ने 8 जेनजी को टिकट दिया है। इनमें कांग्रेस से 6 और बीजेपी से 2 उम्मीदवार हैं। BJP ने राष्ट्र सेविका समिति की स्वयंसेविका और इंटीरियर डिजाइनर प्रज्ञा पाटीदार (26) को वार्ड 38 से टिकट दिया है। 6 महीने पहले प्रज्ञा की शादी हुई है। वार्ड 31 से 27 साल की नसरीन बानो को टिकट दिया है। नसरीन हाउस वाइफ है और उनके 7 साल का बेटा है। उन्होंने 8वीं तक पढ़ाई की है। उनके पति अब्दुल कादिर बीजेपी के अल्पसंख्यक मोर्चा में प्रदेश कार्यकारिणी में सदस्य हैं, जो रियल स्टेट से जुड़ा काम करते हैं।

कांग्रेस से वार्ड 61 में 25 साल की सीमा डांगी को मिला टिकट: कांग्रेस ने वार्ड 55 से जैसिका राव (23) को मैदान में उतारा है। जैसिका अनमैरिड हैं और बीए-एलएलबी की पढ़ाई कर रही हैं। वार्ड 61 से 25 साल की सीमा डांगी को टिकट दिया है। उनके पति विशाल डांगी यूथ कांग्रेस में महासचिव रहे हैं और कानपुर ग्राम पंचायत के वार्ड पंच भी रहे हैं। 10वीं तक पढ़ी सीमा हाउस वाइफ हैं। उनकी 2 बेटियां है। वार्ड नंबर 65 से किशन भील (27), वार्ड 62 से सविता गमेती (28), वार्ड 13 से उषा गमेती (23) और वार्ड 42 से खुशी गमेती (24) को टिकट दिया है। इनके अलावा वार्ड नंबर 10 से बीएपी ने भी साकिब खान (26), वार्ड नंबर 43 से शांतिलाल (26), सीपीआईएम ने वार्ड नंबर 31 से मुस्कान राही (23) और कुल 8 जेन-जी जनरेशन के युवाओं ने निर्दलीय नामाकंन दाखिल किया है।

अजमेर: 9 जेन-जी चुनावी मैदान में : अजमेर में कांग्रेस ने 5 और बीजेपी ने 4 जेनजी प्रत्याशियों को टिकट दिया है। कांग्रेस ने वार्ड 28 में अर्चित शर्मा (29), वार्ड 36 में निहाल सिंह शेखावत (29), वार्ड 46 में मोक्ष नोनिया (26), वार्ड 53 में कुशाल कोमल और वार्ड 12 में पूजा टांक को सिंबल दिया है। वहीं भाजपा ने वार्ड 11 से पूजा भावनानी (27), वार्ड 26 से मोहित चौहान (22), वार्ड 69 से निहारिका त्रिपाठी और वार्ड 80 से कश्यपि साखला पर भरोसा जताया है।

उम्रदराज चेहरों पर भी पार्टियों का भरोसा कायम: भाजपा ने 40 साल तक की उम्र के 19, 41 से 60 साल के 47 और 60 साल से अधिक उम्र के 10 प्रत्याशियों को टिकट दिया है। वहीं कांग्रेस ने 40 साल तक की उम्र के 18, 41 से 60 साल के 45 और 60 साल से अधिक उम्र के 10 प्रत्याशियों पर भरोसा जताया है। दोनों प्रमुख दलों ने 41 से 60 साल की उम्र वाले प्रत्याशियों की संख्या सबसे ज्यादा है। भाजपा ने इस आयु वर्ग में 47 और कांग्रेस ने 45 प्रत्याशियों को टिकट दिया है। वहीं 60 साल से अधिक उम्र के 10-10 प्रत्याशी दोनों दलों से मैदान में हैं।

कोटा: कांग्रेस ने 16 जेन-जी उम्मीदवारों को दिया टिकट; बीजेपी के दो युवा चेहरे

कोटा नगर निगम चुनाव में शहरी सरकार बनाने के लिए इस बार 21 से 29 वर्ष के कई युवा मैदान में उतर चुके हैं। कांग्रेस ने 16 जेनजी को मौका दिया है। इनमें दिव्या मीना (22), रिद्धम शर्मा (23), भुवनेश ऋषि (24), संदीप सिंह (24), अर्पित जैन (24), निधी राजावत (25), अमन गौतम (25), कुनाल शर्मा (25), दीपक कुमार भील (26), धीरज नागर (26), ऋषभ दुबे (26), आयुष पारेता (26) और फैजाल बेग (27) शामिल हैं। वहीं बीजेपी ने इस सूची में 2 चेहरों को मौका दिया है, जिसमें 24 साल के ललित कुशवाहा (वार्ड 70) और 29 वर्षीय नैना गर्ग (वार्ड 67) से चुनाव लड़ रही हैं।

41 साल से ज्यादा उम्र के उम्मीवार

भाजपा ने 41-60 साल की उम्र के 64 प्रत्याशी और 60 से ज्यादा उम्र के 7 प्रत्याशियों को टिकट दिया है। वहीं कांग्रेस ने 41-60 साल के 45 उम्मीदवारों को टिकट दिया है। वहीं 60 साल से ज्यादा के 7 प्रत्याशियों को टिकट दिया है।

309 निकायों के वार्डों के आरक्षण का गणित

श्रेणी	संख्या
कुल निकाय	309
कुल वार्ड	10,245
एससी कुल	1794
एससी ओपन	1197
एससी महिला	597
एसटी कुल	395
एसटी ओपन	282
एसटी महिला	113
ओबीसी कुल	1933
ओबीसी ओपन	1290
ओबीसी महिला	643
अनारक्षित कुल	6,123
अनारक्षित ओपन	4,120
अनारक्षित महिला	2003

17 राजस्थान : भरतपुर के टॉप 8 टूरिस्ट प्लेस, और इतिहास...

18 लोहागढ़ किला, भरतपुर पैलेस, लक्ष्मण मंदिर

पर्यटन

भरतपुर के टॉप 8 टूरिस्ट प्लेस

भरतपुर राजस्थान की यात्रा वहां के ऐतिहासिक, धार्मिक, पर्यटन और मनोरंजन से भरपूर है। पुराने समय से ही भरतपुर का अपना अलग ही महत्व रहा है। भरतपुर को आज भी 'राजस्थान के पूर्वी गेटवे' और राजस्थान के एक महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल के रूप में जाना जाता है। भरतपुर की स्थापना 1733 में महाराजा सूरजमल ने की थी। पूरी दुनिया में अपने पक्षी अभयारण्य के लिए प्रसिद्ध, इसमें अफगानिस्तान, तुर्कमेनिस्तान, चीन और साइबेरिया से प्रवासी पक्षियों की 364 से अधिक प्रजातियां हैं। भरतपुर के अन्य पर्यटक आकर्षणों में लोहागढ़ किला, फतेह, लक्ष्मण मंदिर, भरतपुर पैलेस, देग, गंगा मंदिर आदि भी शामिल हैं। भरतपुर पर्यटन स्थलों की अपनी अलग ही पहचान है। भरतपुर के दर्शनीय स्थलों मे धार्मिक, ऐतिहासिक, मनोरंजन, और जानकारी से भरपूर सभी तरह के आकर्षक स्थल है। जिनके बारें मे हम नीचे विस्तार से जानेंगे। लेकिन उससे पहले जैसा की हम लगभग अपने हर लेख मे कहते है, कि किसी भी जगह की यात्रा, भ्रमण, या सैर पर जाने से पहले उसके इतिहास के बारे मे जानना बेहद जरुरी होता है। उससे हमारी यात्रा का आनंद बढ़ जाता और हम अच्छी तरह से उस जगह या स्थलों को समझ सकते है। तो हम एक हल्की सी नजर भरतपुर के इतिहास पर डाल लेते है।

भरतपुर का इतिहास

17 वीं शताब्दी तक भरतपुर जाट शासकों का प्रभुत्व था और आने वाले सालों में वे मजबूत हो रहे थे। मुगलों ने भरतपुर को जीतने की कोशिश की, लेकिन वे मजबूत शासन के कारण कुछ भी करने में सक्षम नहीं थे, खासतौर पर बदन सिंह और चुरामान के नेतृत्व में। 18 वीं शताब्दी की शुरुआत में, भरतपुर के किसान मुगलों के खिलाफ विद्रोह में उठे। यही वह समय है जब जाट, अपने चाचा चुरामान के साथ बदन सिंह के नेतृत्व में, एक साथ आए और मुगल को हरा दिया। युद्ध की श्रृंखला के बाद, आखिरकार 1724 में बदन सिंह को मान्यता मिली और राज को सम्मानित किया गया। 1733 में, राजा बदन सिंह के गोद लेने वाले पुत्र सूरजमल ने खेमकरन को पराजित कर दिया, प्रतिद्वंद्वी सरदार ने भरतपुर के किले को जब्त कर भरतपुर शहर की नींव रखी। यह सूरजमल के शासनकाल के दौरान था; भरतपुर अपनी सुनहरी अवधि के माध्यम से आगे बढ़ रहा था।

उस अवधि के कई महल और किले जो राज्य की पहचान हैं, जो अब भरतपुर में प्रसिद्ध पर्यटन स्थल हैं,जो सूरजमल के शासन के दौरान बनाए गए थे। बाद में उनका बेटा जवाहर सिंह ने उनका उत्तराधिकारी बना। और 1818 में, अंग्रेजों ने सामने आकर समझौते पर हस्ताक्षर करके जाटों के साथ शांति बना दी। 1947 में, राज्य भारत के प्रभुत्व से जुड़ा हुआ था। भरतपुर आगरा के पश्चिम से 50 किलोमीटर दूर है, और चूंकि यह सुनहरा त्रिकोण दिल्ली, जयपुर और आगरा के बीच आता है, जो भरतपुर के लिए पर्यटकों की आसान पहुंच बनाता है।

भरतपुर के टॉप 8 दर्शनीय स्थल

लोहागढ़ किला

18 वीं शताब्दी में जाट शासकों द्वारा निर्मित, लोहागढ़ किला राजस्थान में बेहतरीन वास्तुकला में से एक है। इसे वास्तव में लोहागढ़ किला, या लौह किला के रूप में नामित किया गया था, क्योंकि ब्रिटिश शासक इसे जीतने में कभी सक्षम नहीं थे। यह किला इतिहास में बने सबसे मजबूत महल में से एक है। किले में प्रवेश दो द्वारों के माध्यम से किया जा सकता है: उत्तर में अशितहातु (आठ-धातु) और चौबर्जा (चार-स्तंभ) दक्षिण में।

किले के अंदर कुछ दिलचस्प स्मारकों में किशोरी महल, महल खास, कोठी खास, मोती महल और जवाहर बुर्ज, फतेह बुर्ज, महल खास, कामरा महल और पुराण महल जैसी इमारतें शामिल हैं। लोहागढ़ किले में एक सरकारी संग्रहालय भी है, जो विभिन्न हथियारों और हथियारों को प्रदर्शित करता है। भरतपुर के जाट शासकों की प्रतिद्वंद्विता और साहस के लिए एक जीवित साक्ष्य के रूप में किला गर्व से खड़ा है।

सरकारी संग्रहालय

भरतपुर का सरकारी संग्रहालय भरतपुर के सभी निवासियों और यात्रियों के लिए एक प्रमुख आकर्षण है। लोहागढ़ किले के दिल में स्थित, इसे 1944 ईस्वी में एक संग्रहालय में बदल दिया गया था। संग्रहालय में एक आर्ट गैलरी भी है जिसमें पिपल पेड़, मीका और पुराने लिथो पेपर की पत्तियों पर लघु चित्रों के नमूने शामिल हैं। इस संग्रहालय में मुख्य रूप से पत्थर की मूर्तियां, शिलालेख, टेराकोटा आइटम, धातु वस्तुएं, सिक्के, हथियार, लघु चित्र और स्थानीय कला शामिल हैं। ये सभी चीजें इस क्षेत्र की समृद्ध विरासत, कला और शिल्प के बारे में बताती हैं।

भरतपुर पैलेस

यह शानदार महल राजपूत और मुगल वास्तुशिल्प शैलियों में बनाया गया था। भरतपुर महल राजस्थान के इतिहास की समृद्ध विरासत को प्रदर्शित करता है। मुख्य केंद्रीय पंख में संग्रहालय है, जिसमें खूबसूरत मूर्तियों, प्राचीन शिलालेखों और अन्य डिस्प्ले का समृद्ध संग्रह है जो इस क्षेत्र के लोगों की कला और कौशल को दर्शाता है। इस महल और विशाल कक्षों की दीवारों पर अत्यधिक जटिल और भव्य डिजाइनों के कारण, यह जगह एक महान स्मारक माना जाता है। कोई भी दूसरी शताब्दी से इस जगह पर प्राचीन वस्तुओं को देख सकता है।

लक्ष्मण मंदिर

लक्ष्मण मंदिर राजस्थान के भरतपुर शहर के केंद्र में स्थित है। लक्ष्मणजी और उर्मिला जी यहां प्रमुख देवताओं में शामिल हैं, लेकिन उनके अलावा राम, भारत, शत्रुघन और हनुमान की अन्य छोटी मूर्तियां भी स्थापित हैं। ये सभी मूर्ति अष्टधातु की हैं। मंदिर के मूर्तिकलात्मक काम और वास्तुकला की विविधता अद्वितीय है। जगमोहन फॉर्म का शीर्ष भाग ऊपर से नीचे राहत सुविधाओं, पुष्प पैटर्न और पक्षियों से सजाया गया है। इसी प्रकार, जगमोहन की छत सौंदर्य में कम नहीं है। यह मूर्तिकला का एक अद्भुत निर्माण भी है। चूंकि मंदिर भरतपुर शहर के दिल में खड़ा है, इसलिए हमेशा आगंतुकों की भीड़ मौजूद होती है। उस समय भरतपुर के राजा एक ऋषि संत दास के महान भक्त थे। वे राजा शासन के आखिरी दिन थे।

डीग भरतपुर

भरतपुर शहर से 35 कलोमीटर की दूरी पर स्थित डीग अपने भव्य और ऐतिहासिक डीग पैलेस के लिए जाना जाता है। भरतपुर जिले के पर्यटन स्थलों मे यह एक प्रमुख स्थान है। भरतपुर के के आसपास के आकर्षक स्थलों मे यह सबसे ज्यादा पसंदीदा स्थान है।

हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार, भगवान कृष्ण ने गोवर्धन से अपना परिक्रमा शुरू किया और अपने रास्ते में अपनी शुभ उपस्थिति के साथ देग को आशीर्वाद दिया। स्कंद पुराण के रूप में पूर्व में 'दिघघा' या 'दिघापुर', 1722 में जाट नेता बदन सिंह के शासनकाल के दौरान देवत भरतपुर की पहली राजधानी थी। महाराजा सूरजमल ने राजधानी को भरतपुर में स्थानांतरित कर दिया जहां देग दूसरी राजधानी बन गई।

पानीपत की तीसरी लड़ाई के बाद, डीग मुगल शासन में गया और उसके बाद यह अंग्रेजों के हाथ में चला गया। आज भी, डीग प्रकृति के शांतिपूर्ण निवास में शोर और शहर के जीवन के हलचल से बच निकला है। डीग किला जिसमें प्रसिद्ध डीग पैलेस है, 1730 में महाराजा सूरज माल द्वारा बनाया गया था। उन्हें मुगल निर्माणों द्वारा स्थानांतरित किया गया था और इस स्मारक में भी प्रभाव स्पष्ट है। किले के बगीचे का लेआउट मुगल चारबाग जैसा दिखता है। मध्य में चलने वाले रास्ते से अलग चार बगीचे हैं। किले का एक वर्ग आकार है। किलेबंदी सतह से 20 मीटर बढ़ती है। आप उत्तर से किले में प्रवेश कर सकते हैं और रेडस्टोन और संगमरमर में खंडहरों का दृश्य प्राप्त कर सकते हैं।

किला नौ सौ फव्वारे के साथ सजाया गया है। सभी को संचालित करने के लिए, पानी के गैलन की आवश्यकता है। पुराने दिनों में, टैंक को भरने के लिए पानी ले जाने के लिए बैल गाड़ियां इस्तेमाल की जाती थीं। चल रहे फव्वारे के शाही दृश्य को पाने के लिए, आपको शनिवार को मानसून के दौरान यात्रा करने की आवश्यकता होती है,जब फव्वारे चलते हैं। दोनों तरफ, गोपाल सागर और रुप सागर पर दो टैंक हैं। किले के परिवेश तापमान को कम करने के उद्देश्य से इतने सारे जल निकायों की उपस्थिति की गई थी राजा गोपाल भवन नाम की मुख्य इमारत में रहते थे। यहां से आप बगीचों का एक शानदार दृश्य प्राप्त करते हैं। ग्राउंड फ्लोर में एक बड़ा हॉल है जहां राजा ने अपने मेहमानों से मिलते और उनका परिवार उपरोक्त अपार्टमेंट में रहता था। रुप सागर के बगल में केशव भवन है, जहां राजा मानसून में पीछे चले जाते थे। इसके अलावा यहा किसान भवन है जहां राजा शाही नीतियों की रणनीति बनाने के लिए अपने अधिकारियों के साथ महत्वपूर्ण बैठकें करते थे। नंदी भवन जो कुश्ती खेले के लिए आरक्षित था। इस किले का एक और आकर्षण कई फव्वारे के अलावा सावन और भादो नाम की दो नाव के आकार के भवन हैं।

डिजाइन शानदार हैं और शिल्प कौशल जिसके साथ प्रत्येक संरचना से पानी एक चूट के माध्यम से चलता है और एक बरामदे पर गिरता है। होली के दौरान, जलाशयों में रंग जोड़े जाते थे और फव्वारे से बाहर आने वाले रंगीन पानी किले की सुंदरता को कई गुना बढ़ाते थे। रेगिस्तान में रंगों का इतना शानदार प्रदर्शन बस अद्भुत होता था। किले को शुक्रवार को छोड़कर सभी दिनों 9 बजे से शाम 5 बजे के बीच देखा जा सकता है। एक पर्यटक के रूप में राजस्थान जाने का सबसे अच्छा समय अक्टूबर से मार्च तक है। सितंबर और फरवरी के महीनों में उत्सव के समय डीग पैलेस के फव्वारे हर साल दो बार चलाए जाते हैं। इसलिए, आप आवास के लिए पूर्व बुकिंग के साथ तदनुसार और निश्चित रूप से अपनी यात्रा की योजना बना सकते हैं।

गंगा मंदिर भरतपुर

ऐसा कहा जाता है कि वर्ष 1845 में महाराजा बलवंत सिंह ने इस मंदिर के निर्माण को शुरू किया था। मंदिर की निर्माण प्रक्रिया काफी अनूठी थी कि राज्य के सभी कर्मचारियों और कई अन्य समृद्ध स्थानीय लोगों को मंदिर के निर्माण की दिशा में योगदान देने के लिए कहा गया था। ऐसा कहा जाता है कि मंदिर बनाने के लिए करीब 9 दशकों का समय लिया गया था। एक बार मंदिर पूरा हो जाने के बाद, बृजेंद्र सिंह, बलवंत सिंह के पांचवें वंशज ने मंदिर में देवी गंगा की मूर्ति रखी।

यह उस समय से है कि मंदिर को गंगा मंदिर के रूप में जाना जाने लगा। दक्षिण भारतीय, राजपूत और मुगल शैलियों - इस मंदिर की सुंदरता और महिमा को देखते समय इनका एक संगम प्रतित होता है। संरचनाओं के खंभे और दीवारों पर कई शानदार नक्काशी हैं। बहुत से लोग महसूस करते हैं कि इसकी कई विस्तृत नक्काशी के साथ बलुआ पत्थर की संरचना कम उप महाद्वीपीय मंदिर जैसा दिखता है और नव-शास्त्रीय शैली का एक फ्रेंच चट्टान जैसा दिखता है ङ्क संरचना ऊंचाई में दो मंजिलों की तरह है।

देवता की मूर्ति प्राचीन संगमरमर, सफेद रंग में प्रबल दिखती है। माना जाता है कि मूर्ति एक विशाल मगरमच्छ पर बैठी है। मंदिर में एक गोंग है जो इसे दूर से सुनने के लिए पर्याप्त मजबूत है। यहां राजा भागीरथ की चार पैर की मूर्ति भी मौजूद है। मंदिर के प्रवेश द्वार में भगवान कृष्ण भी भारतीय पौराणिक कथाओं के प्रसिद्ध चित्रणों में से एक में गिरि राज या गोवर्धन माउंटेन आयोजित मूर्तिकला में हैं। देवताओं शिव और माता पार्वती के साथ-साथ मंदिर में लक्ष्मी और नारायण की मूर्तियां भी हैं। गंगा दशहरा और गंगा शप्तशती धार्मिक त्यौहार हर साल यहां भक्तों की विशाल भीड़ खींचते हैं। मंदिर इन आयोजनों के दौरान विस्तृत और उत्कृष्ट रूप से सजाया जाता है जो राजस्थान के भरतपुर शहर में बार बार पर्यटकों को यहां आने के लिए प्रेरित करता है।

केलादेव नेशनल पार्क

भरतपुर से 3 किलोमीटर से भी कम दूरी पर स्थि भरतपुर पक्षी अभयारण्य जिसे केलादेओ नेशनल पार्क, के नाम से भी जाना जाता है। भारतपुर बर्ड सेंचुअरी में 364 से अधिक नस्लें, 379 पुष्प प्रजातियां, मछली की 50 प्रजातियां, सांपों की 13 प्रजातियां, छिपकलियों की 5 प्रजातियां, 7 उभयचर प्रजातियां, 7 कछुए प्रजातियां और कई अन्य जीवजंतु हैं। यह जगह पक्षियों की एक चौंकाने वाली विविधता का एक समृद्ध निवास है। 29 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में फैला हुआ, राष्ट्रीय उद्यान ताजा उथले झीलों, पानी के मंगल और बोगों से भरा है।

यह 20 वीं शताब्दी में मोरवी (गुजरात) के प्रिंस भामजी ने बनाया था। बाद में इसे 1964 तक भरतपुर के महाराजा सूरजमल के लिए एक बतख शिकार दृष्टि के रूप में इस्तेमाल किया गया, जिसके बाद शिकार पर प्रतिबंध लगा दिया गया। 1985 में, इस शहर को यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल के रूप में स्वीकार किया गया था; इसे 1982 में एक राष्ट्रीय उद्यान के रूप में मान्यता प्राप्त थी। इस पक्षी के स्वर्ग को अक्सर 'ऑर्निथोलॉजिस्ट के पैराडाइज' के रूप में जाना जाता है क्योंकि यह कुछ लोकप्रिय और आप्रवासी पक्षियों जैसे हॉक्स, बतख, ईगल, क्रेन, पेलिकन, वाग्टेल, शंकु, हंस, वारब्लर्स को आकर्षित करता है। , बुनिंग्स, फ्लाईकैचर्स, स्टिंट्स, व्हीटर, लार्क्स और पाइपिट्स। भरतपुर पर्यटन ने इस वन्यजीव शताब्दी को महान प्रयास और समर्पण के माध्यम से संरक्षित किया है। इस पार्क में आने वाले आगंतुक साइबेरिया, अफगानिस्तान और मध्य एशिया के पक्षियों की एक दिलचस्प नस्ल देख सकते हैं।

पक्षियों के अलावा, स्तनधारियों की एक विस्तृत विविधता है, जैसे कि फारल मवेशी, नील गाय और धब्बेदार हिरण। पानी के सांप, भारतीय अजगर, ब्रांडेड क्रेट, हरी चूहे सांप, कछुओं और मॉनीटर छिपकली जैसी विभिन्न सरीसृप भी यहां देखने को मिल सकती हैं।

जवाहर बुर्ज

जवाहर बुर्ज और फतेह बुर्ज लोहागढ़ किले के गौरवशाली रैंपर्ट के भीतर खड़े हैं। इस साइट को सभी जाट शासकों के लिए कोरोनेशन साइट के रूप में माना जाता था।

उन्हें महाराजा सूरजमल ने मुगलों और अंग्रेजों पर अपनी जीत मनाने के लिए बनाया था। इन दो स्थानों को विजय टावर के रूप में माना जाता है और, बिगड़ती भित्तिचित्रों से सजाए गए हैं। यह राज्य के अन्य किलों से अलग है जिसमें किले के साथ कोई झुकाव नहीं है। हालांकि, यह ताकत और भव्यता का एक आभा उत्पन्न करता है।

श्री कृष्ण जन्माष्टमी-2026 का महत्त्व और तिथि... 31

पितृ पक्ष श्राद्ध 2026 - परंपरा, समारोह और महत्व... 33

त्यौहार

श्री कृष्ण जन्माष्टमी-2026

शुक्रवार, 04 सितंबर, 2026

गृहस्थ और वैष्णव सम्प्रदाय के लिए जन्माष्टमी की तिथि

गृहस्थ और वैष्णव संप्रदाय के लोग लग-अलग दिन कृष्ण जन्माष्टमी पर्व मनाते है। ऐसें में 4 सितंबर 2026 को गृहस्थ जीवन वाले लोग और 7 सितंबर 2026 को वैष्णव सम्प्रदाय के लोग कान्हा जी का जन्मोत्सव मना सकते हैं।

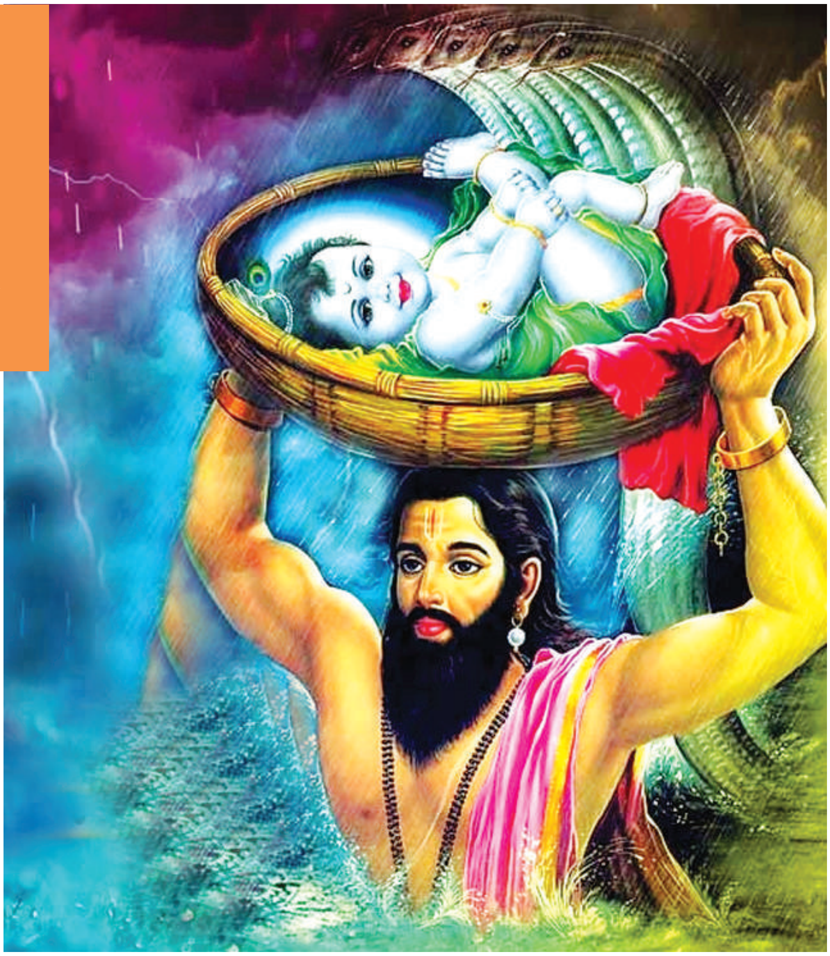

"जन्माष्टमी का त्यौहार श्री कृष्ण के जन्मोत्सव के रूप में मनाया जाता है। मथुरा नगरी में असुरराज कंस के कारागृह में देवकी की आठवीं संतान के रूप में भगवान श्रीकृष्ण भाद्रपद कृष्णपक्ष की अष्टमी को पैदा हुए। उनके जन्म के समय अर्धरात्रि (आधी रात) थी, चन्द्रमा उदय हो रहा था और उस समय रोहिणी नक्षत्र भी था। इसलिए इस दिन को प्रतिवर्ष कृष्ण जन्मोत्सव के रूप में मनाया जाता है।"

कृष्ण जन्माष्टमी का मुहूर्त

1. अष्टमी पहले ही दिन आधी रात को विद्यमान हो तो जन्माष्टमी व्रत पहले दिन किया जाता है।
2. अष्टमी केवल दूसरे ही दिन आधी रात को व्याप्त हो तो जन्माष्टमी व्रत दूसरे दिन किया जाता है।
3. अष्टमी दोनों दिन आधी रात को व्याप्त हो और अर्धरात्रि (आधी रात) में रोहिणी नक्षत्र का योग एक ही दिन हो तो जन्माष्टमी व्रत रोहिणी नक्षत्र से युक्त दिन में किया जाता है।
4. अष्टमी दोनों दिन आधी रात को विद्यमान हो और दोनों ही दिन अर्धरात्रि (आधी रात) में रोहिणी नक्षत्र व्याप्त रहे तो जन्माष्टमी व्रत दूसरे दिन किया जाता है।
5. अष्टमी दोनों दिन आधी रात को व्याप्त हो और अर्धरात्रि (आधी रात) में दोनों दिन रोहिणी नक्षत्र का योग न हो तो जन्माष्टमी व्रत दूसरे दिन किया जाता है।
6. अगर दोनों दिन अष्टमी आधी रात को व्याप्त न करे तो प्रत्येक स्थिति में जन्माष्टमी व्रत दूसरे ही दिन होगा।

विशेष:- उपरोक्त मुहूर्त स्मार्त मत के अनुसार दिए गए हैं। वैष्णवों के मतानुसार श्रीकृष्ण जन्माष्टमी अगले दिन मनाई जाएगी। ध्यान रहे कि वैष्णव और स्मार्त सम्प्रदाय मत को मानने वाले लोग इस त्यौहार को अलग-अलग नियमों से मनाते हैं।

हिन्दू धर्मशास्त्रों के अनुसार वैष्णव वे लोग हैं, जिन्होंने वैष्णव संप्रदाय में बतलाए गए नियमों के अनुसार विधिवत दीक्षा ली है। ये लोग अधिकतर अपने गले में कण्ठी माला पहनते हैं और मस्तक पर विष्णुचरण का चिन्ह (टीका) लगाते हैं। इन वैष्णव लोगों के अलावा सभी लोगों को धर्मशास्त्र में स्मार्त कहा गया है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि - वे सभी लोग, जिन्होंने विधिपूर्वक वैष्णव संप्रदाय से दीक्षा नहीं ली है, स्मार्त कहलाते हैं।

जन्माष्टमी व्रत व पूजन विधि

1. इस व्रत में अष्टमी के उपवास से पूजन और नवमी के पारणा से व्रत की पूर्ति होती है।
2. इस व्रत को करने वाले को चाहिए कि व्रत से एक दिन पूर्व (सप्तमी को) हल्का तथा सात्विक भोजन करें। रात्रि को स्त्री संग से वंचित रहें और सभी ओर से मन और इंद्रियों को काबू में रखें।
3. उपवास वाले दिन प्रात: स्नानादि से निवृत होकर सभी देवताओं को नमस्कार करके पूर्व या उत्तर को मुख करके बैठें।
4. हाथ में जल, फल और पुष्प लेकर संकल्प करके मध्यान्ह के समय काले तिलों के जल से स्नान कर देवकी जी के लिए प्रसूति गृह बनाएँ। अब इस सूतिका गृह में सुन्दर बिछौना बिछाकर उस पर शुभ कलश स्थापित करें।
5. साथ ही भगवान श्रीकृष्ण जी को स्तनपान कराती माता देवकी जी की मूर्ति या सुन्दर चित्र की स्थापना करें। पूजन में देवकी, वासुदेव, बलदेव, नन्द, यशोदा और लक्ष्मी जी इन सबका नाम क्रमश: लेते हुए विधिवत पूजन करें।
6. यह व्रत रात्रि बारह बजे के बाद ही खोला जाता है। इस व्रत में अनाज का उपयोग नहीं किया जाता। फलहार के रूप में कुट्टू के आटे की पकौड़ी, मावे की बर्फी और सिंघाडे के आटे का हलवा बनाया जाता है।

जन्माष्टमी कथा

द्वापर युग के अंत में मथुरा में उग्रसेन राजा राज्य करते थे। उग्रसेन के पुत्र का नाम कंस था। कंस ने उग्रसेन को बलपूर्वक सिंहासन से उतारकर जेल में डाल दिया और स्वयं राजा बन गया। कंस की बहन देवकी का विवाह यादव कुल में वासुदेव के साथ निश्चित हो गया।

जब कंस देवकी को विदा करने के लिए रथ के साथ जा रहा था तो आकाशवाणी हुई, हे कंस! जिस देवकी को तू बड़े प्रेम से विदा कर रहा है उसका आठवाँ पुत्र तेरा संहार करेगा। आकाशवाणी की बात सुनकर कंस क्रोध से भरकर देवकी को मारने के लिए तैयार हो गया। उसने सोचा - न देवकी होगी न उसका कोई पुत्र होगा।

वासुदेव जी ने कंस को समझाया कि तुम्हें देवकी से तो कोई भय नहीं है। देवकी की आठवीं संतान से भय है। इसलिए मैँ इसकी आठवीं संतान को तुम्हे सौंप दूँगा। कंस ने वासुदेव जी की बात स्वीकार कर ली और वासुदेव-देवकी को कारागार में बंद कर दिया। तत्काल नारद जी वहाँ आ पहुँचे और कंस से बोले कि यह कैसे पता चलेगा कि आठवाँ गर्भ कौन-सा होगा। गिनती प्रथम से शुरू होगी या अंतिम गर्भ से। कंस ने नारद जी के परामर्श पर देवकी के गर्भ से उत्पन्न होने वाले समस्त बालकों को एक-एक करके निर्दयतापूर्वक मार डाला।

भाद्रपद के कृष्ण पक्ष की अष्टमी को रोहिणी नक्षत्र में श्रीकृष्ण जी का जन्म हुआ। उनके जन्म लेते ही जेल की कोठरी में प्रकाश फैल गया। वासुदेव-देवकी के सामने शंख, चक्र, गदा एवं पदमधारी चतुर्भुज भगवान ने अपना रूप प्रकट कर कहा, अब में बालक का रूप धारण करता हूँ। तुम मुझे तत्काल गोकुल में नन्द के यहाँ पहुँचा दो और उनकी अभी-अभी जन्मी कन्या को लेकर कंस को सौंप दो। वासुदेव जी ने वैसा ही किया और उस कन्या को लेकर कंस को सौंप दिया।

कंस ने जब उस कन्या को मारना चाहा तो वह कंस के हाथ से छूटकर आकाश में उड़ गई और देवी का रूप धारण कर बोली कि मुझे मारने से क्या लाभ है? तेरा शत्रु तो गोकुल पहुँच चुका है। यह दृश्य देखकर कंस हतप्रभ और व्याकुल हो गया। कंस ने श्रीकृष्ण को मारने के लिए अनेक दैत्य भेजे। श्रीकृष्ण जी ने अपनी आलौकिक माया से सारे दैत्यों को मार डाला। बड़े होने पर कंस को मारकर उग्रसेन को राजगद्दी पर बैठाया।

श्राद्ध पक्ष (पितृ पक्ष) का महत्त्व

आश्विन के कृष्ण पक्ष को हमारे हिन्दू धर्म में श्राद्ध पक्ष के रूप में मनाया जाता है। इसे महालय और पितृ पक्ष भी कहते हैं। श्राद्ध की महिमा एवं विधि का वर्णन विष्णु, वायु, वराह, मत्स्य आदि पुराणों एवं महाभारत, मनुस्मृति आदि शास्त्रों में यथास्थान किया गया है। श्राद्ध का अर्थ अपने देवों, परिवार, वंश परंपरा, संस्कृति और इष्ट के प्रति श्रद्धा रखना है।

हिंदू शास्त्रों में कहा गया है कि जो स्वजन अपने शरीर को छोड़कर चले गए हैं चाहे वे किसी भी रूप में अथवा किसी भी लोक में हों, उनकी तृप्ति और उन्नति के लिए श्रद्धा के साथ जो शुभ संकल्प और तर्पण किया जाता है, वह श्राद्ध है। माना जाता है कि सावन की पूर्णिमा से ही पितर मृत्यु लोक में आ जाते हैं और नवांकुरित कुशा की नोकों पर विराजमान हो जाते हैं। ऐसी मान्यता है कि पितृ पक्ष में हम जो भी पितरों के नाम का निकालते हैं, उसे वे सूक्ष्म रूप में आकर ग्रहण करते हैं।

केवल तीन पीढ़ियों का श्राद्ध और पिंड दान करने का ही विधान है। पुराणों के अनुसार मुताबिक मृत्यु के देवता यमराज श्राद्ध पक्ष में जीव को मुक्त कर देते हैं, ताकि वे स्वजनों के यहां जाकर तर्पण ग्रहण कर सकें। श्राद्ध पक्ष में मांसाहार पूरी तरह वर्जित माना गया है। श्राद्ध पक्ष का माहात्म्य उत्तर व उत्तर-पूर्व भारत में ज्यादा है। तमिलनाडु में आदि अमावसाई, केरल में करिकडा वावुबली और महाराष्ट्र में इसे पितृ पंधरवडा नाम से जानते हैं। श्राद्ध स्त्री या पुरुष, कोई भी कर सकता है। श्रद्धा से कराया गया भोजन और पवित्रता से जल का तर्पण ही श्राद्ध का आधार है। ज्यादातर लोग अपने घरों में ही तर्पण करते हैं। श्राद्ध का अनुष्ठान करते समय दिवंगत प्राणी का नाम और उसके गोत्र का उच्चारण किया जाता है।

हाथों में कुश की पैंती (उंगली में पहनने के लिए कुश का अंगूठी जैसा आकार बनाना) डालकर काले तिल से मिले हुए जल से पितरों को तर्पण किया जाता है। मान्यता है कि एक तिल का दान बत्तीस सेर स्वर्ण तिलों के बराबर है। परिवार का उत्तराधिकारी या ज्येष्ठ पुत्र ही श्राद्ध करता है। जिसके घर में कोई पुरुष न हो, वहां स्त्रियां ही इस रिवाज को निभाती हैं। परिवार का अंतिम पुरुष सदस्य अपना श्राद्ध जीते जी करने के लिए स्वतंत्र माना गया है।

संन्यासी वर्ग अपना श्राद्ध अपने जीवन में कर ही लेते हैं। श्राद्ध पक्ष में शुभ कार्य वर्जित माने गए हैं। श्राद्ध का समय दोपहर साढ़े बारह बजे से एक बजे के बीच उपयुक्त माना गया है। यात्रा में जा रहे व्यक्ति, रोगी या निर्धन व्यक्ति को कच्चे अन्न से श्राद्ध करने की छूट दी गई है।

कुछ लोग कौओं, कुत्तों और गायों के लिए भी अंश निकालते हैं। कहते हैं कि ये सभी जीव यम के काफी नजदीकी हैं और गाय वैतरणी पार कराने में सहायक है।

पितृ पक्ष में श्राद्ध की तिथियां

दिनांक	वार	तिथि	श्राद्ध
27 सितंबर	रविवार	प्रतिपदा	प्रतिपदा श्राद्ध
28 सितंबर	सोमवार	द्वितीया	द्वितीया श्राद्ध
29 सितंबर	मंगलवार	तृतीया	तृतीया श्राद्ध
30 सितंबर	बुधवार	चतुर्थी	चतुर्थी और पंचमी श्राद्ध
1 अक्टूबर	गुरुवार	षष्ठी	षष्ठी श्राद्ध
2 अक्टूबर	शुक्रवार	सप्तमी	सप्तमी श्राद्ध
3 अक्टूबर	शनिवार	अष्टमी	अष्टमी श्राद्ध
4 अक्टूबर	रविवार	नवमी	नवमी श्राद्ध
5 अक्टूबर	सोमवार	दशमी	दशमी श्राद्ध
6 अक्टूबर	मंगलवार	एकादशी	एकादशी श्राद्ध
7 अक्टूबर	बुधवार	द्वादशी	द्वादशी श्राद्ध
8 अक्टूबर	गुरुवार	त्रयोदशी	त्रयोदशी श्राद्ध
9 अक्टूबर	शुक्रवार	चतुर्दशी	चतुर्दशी श्राद्ध
10 अक्टूबर	शनिवार	अमावस्या	सर्वपितृ श्राद्ध

क्या हैं पितृ पक्ष का इतिहास

पौराणिक कथा के अनुसार, जब महाभारत युद्ध के दौरान योद्धा राजा कर्ण की मृत्यु हो गई और उनकी आत्मा स्वर्ग में चढ़ गई, तो उन्हें भोजन के बजाय गहने और सोने का भोजन दिया गया। यह महसूस करते हुए कि वह इन वस्तुओं पर खुद को बनाए नहीं रख सकता है, उन्होंने स्वर्ग के स्वामी इंद्र को संबोधित किया और उनसे पूछा कि उन्हें असली भोजन क्यों नहीं मिल रहा है।

भगवान इंद्र ने तब उन्हें बताया था क्योंकि उन्होंने इन वस्तुओं को अपने पूरे जीवन दान के रूप में दिया था लेकिन अपने पूर्वजों को कभी भी भोजन दान नहीं किया। जिस पर कर्ण ने उत्तर दिया कि वह अपने पूर्वजों से अवगत नहीं था। इस तर्क को सुनकर, इंद्र पंद्रह दिन की अवधि के लिए कर्ण को पृथ्वी पर वापस जाने के लिए सहमत हुए ताकि वह अपने पूर्वजों की स्मृति में भोजन बना सके और दान कर सके। समय की अवधि जिसे अब पितृ पक्ष के रूप में जाना जाता है।

पितृ पक्ष श्राद्ध 2026 - परंपरा, समारोह और महत्व

इस दौरान श्राद्ध का अनुष्ठान किया जाता है। इस अनुष्ठान की यह विशिष्टता व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में भिन्न हो सकती है, लेकिन आमतौर पर यह तीन घटकों को जोड़ती है। पहला हिस्सा पिंडदान है, पूर्वजों को पिंडा का प्रसाद। पिंडा चावल की गेंदें हैं जो आमतौर पर बकरी के दूध, घी, चीनी, चावल, शहद और कभी-कभी जौ से बनती हैं। समारोह का दूसरा भाग तर्पण, कुशा घास, जौ, आटा और काले तिल के साथ मिश्रित जल का चढ़ावा है। समारोह का अंतिम हिस्सा ब्राह्मण को खिलाया जाता है। यह ब्राह्मण पुजारियों को भोजन दे रहा है। साथ ही इस समय के दौरान, पवित्र शास्त्र से पढ़ना शुभ माना जाता है।

हालाँकि, कुछ चीजें ऐसी भी हैं जिन्हें पितृ पक्ष के दौरान करने से बचना चाहिए। प्रतिभागियों को नए प्रयासों में संलग्न होने से बचने के लिए माना जाता है; मांसाहारी खाद्य पदार्थ खाना; शेविंग या बाल कटाने; प्याज, लहसुन खाना या जंक फूड खाना।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे संतु निरामया

दीपाली वार्ष्णेय अग्रवाल
सुजोक थैरेपिस्ट,
नेचरोपैथी

ज्वार, बाजरा, रागी

अगर आप इनका उपयोग खाने में करते हैं तो आपको पता होना चाहिए।

ज्वार बहुत हल्का और सुपाच्य होता है ,सभी लोग इसका सेवन कर सकते हैं,किसी भी मौसम में खाया जा सकता है, पाचन कमज़ोर होने पर ज्वार की रोटी बहुत फायदा करती है।

बाजरा, इसमें कैल्शियम होता है गर्म तासीर का होता है, इसको सर्दी में खाना अच्छा रहता है,कफ़ प्रकृति वालो के लिए बहुत अच्छा है। पात और पित्त बढ़ा हो तो बाजरे की रोटी का सेवन कम करें। रागी, रागी को सुपर फूड कहते हैं इसमे कैल्शियम और पोटेशियम अधिक मात्रा में होता है।वात प्रकृति के लोग इसका सेवन कम करें। जिनके पथरी है या बार बार होती है वह इसका सेवन ना करें। इनकी तासीर रूखी है इसलिए इनमें खूब गाय का घी डालकर या मक्खन से खाएं। पानी अधिक पियें।

फिटकरी

अगर पसीना ज़्यादा आता है, पसीने मे स्मैल आती है तो नहाने के बाद एक फिटकरी का टुकड़ा गीला करके जहाँ पसीना ज़्यादा आता है वहां रगड़ लें। स्किन पर एलर्जी, रेशिज़, दाने होने पर भी फिटकरी लगाने से लाभ होता है।

खसखस

जिन लोगों को बहुत थकान रहती है, कमजोरी है, हाथ पैरों मे दर्द, न्यूट्रीशन की कमी है वात बढ़ा हुआ है, जॉइंट पेन, शरीर मे रूखापन, अनिंद्रा, आदि परेशानिया हैं उनके लिए खसखस की खीर बहुत फायदेमंद होती है।

दो छोटे चम्मच खसखस को रात भर पानी मे भिगो दें, साथ कुछ बादाम अखरोट भी भिगो दें। सुबह बादाम छीलकर सभी को पीस लें, दो ग्लास गाय के दूध मे इनको पकायें, दूध खूब पक जाने पर इसमें इलायची और खजूर मिलाकर खाएं। गुड़ नहीं मिलाना क्युकी दूध और गुड़ विरुद्ध आहार हैं।

आँखों के लिए उपयोगी उपाय

आँखों से संबंधित समस्याएँ जैसे—
आँखों से पानी आना
आँखों में ड्राईनेस (सूखापन)
चश्मे का नंबर बढ़ना
आँखों की सामान्य कमजोरी
इनके लिए रात को सोने से पहले:
1 चम्मच त्रिफला चूर्ण
1 चम्मच शहद
½ चम्मच देसी घी
इन तीनों को मिलाकर सेवन करें।

साथ ही सुबह और शाम नाभि में 2–3 बूंद तेल लगाने से भी लाभ मिल सकता है।

यदि आँखों में लगातार दर्द, लालिमा, धुंधला दिखना या किसी प्रकार की गंभीर समस्या हो तो नेत्र विशेषज्ञ से परामर्श अवश्य लें।

भीमसेनी कपूर

भीमसेनी कपूर के उपयोग से शरीर को अनेक लाभ मिलते हैं।

किसी भी दर्द निवारक तेल या तिल के तेल में थोड़ा सा भीमसेनी कपूर मिलाकर मालिश करने से जोड़ों तथा नसों के दर्द में लाभ मिलता है।

जो लोग घर पर काजल बनाते हैं, वे उसमें थोड़ा सा कपूर मिला सकते हैं। पारंपरिक रूप से इसे आँखों के लिए लाभकारी माना जाता है।

पायरिया, दाँतों के दर्द तथा मुँह की दुर्गंध में दन्तमंजन में थोड़ा कपूर मिलाकर प्रयोग करने से लाभ मिल सकता है।

भीमसेनी कपूर का स्वाद तीखा, कसैला तथा हल्का मीठा होता है।

भोजन के बाद पान में थोड़ी मात्रा में कपूर मिलाकर सेवन करने से पाचन क्रिया को सहायता मिलती है। इसे तंत्रिका तंत्र (नर्वस सिस्टम) के लिए भी लाभकारी माना जाता है।

सावधानी: कपूर का सेवन केवल शुद्ध खाद्य-योग्य (edible) भीमसेनी कपूर का ही करना चाहिए तथा बहुत कम मात्रा में करना चाहिए। अधिक मात्रा हानिकारक हो सकती है।

कोलेस्ट्रॉल

जिनलोगों को कोलेस्ट्रॉल ज़्यादा है नसों मे ब्लॉकेज हैं, लेकिन गर्म तासीर की चीजें नुकसान करती हैं, पित्त बढ़ा हुआ है,उनको दो कप पानी मे एक चम्मच साबुत धनिया, दो लॉन्ग, चौथाई चम्मच मुलेठी पाउडर, आधा चम्मच भुई आवला का चूर्ण डालकर उबालें ज़ब एक कप रह जाये तो सुबह खाली पेट पियें, ये पित्त और कफ़ को संतुलित करता है। कॉलेस्ट्रॉल कम करता है ब्लॉकेज कम कम करता है।

कोकम

सूखा कोकम ले और उसको पूरी रात पानी में भिगो दें, सुबह उसको मसलकर छान लें, उसमे थोड़ा भुना जीरा, नमक, गुड़ मिलाएं, ऊपर से हींग जीरे का छोक लगाएंगे, हरा धनिया डालकर सुबह नाश्ते से पहले और lunch के पहले लें। इससे कफ़ और वात कंट्रोल रहते हैं, पाचन अच्छा होता, पेट की चर्बी कम होती है।

एपल शुरू करने से पहले भारत क्यों आए थे स्टीव जॉब्स, उनकी यात्रा कैसे बनी 'हनुमान अंश' की प्रेरणा?

नीम करौली बाबा पर बनी फिल्म हनुमान अंश इस वक्त पूरे देश में धूम मचा रही है। रिलीज के 30 दिन में ही फिल्म ने 100 करोड़ से ज्यादा की कमाई कर ली है। वह भी तब, जब शुरुआती 20 दिन में फिल्म ने सिर्फ 12 करोड़ ही कमाए थे। यानी 10 दिन में ही फिल्म ने 88 करोड़ रुपये कमा लिए हैं। हनुमान अंश के बारे में एक खास बात यह है कि एक समय ऐसा आया था, जब फिल्म अधिकतर थिएटरों से उतर गई थी, हालांकि निर्देशक-निर्माता की कोशिशों और जुबानी प्रचार यानी वर्ड ऑफ माउथ पब्लिसी के दम पर फिल्म अब लगातार लोकप्रियता हासिल कर रही है।

इस फिल्म के बनने से लेकर इसके रिलीज को लेकर अब तक कई कहानियां भी सामने आ चुकी हैं। हालांकि, एक हालिया खुलासा इस फिल्म की निर्माता अनुप्रिया नागर ने किया है। 21 साल की अनुप्रिया ने बताया है कि उन्होंने कभी भी फिल्म बनाने का नहीं सोचा था। लेकिन एपल के सह-संस्थापक दिवंगत स्टीव जॉब्स की नीम करौली बाबा से जुड़ी एक कहानी ने उन्हें हनुमान अंश का निर्माण करने के लिए प्रेरित किया।

ऐसे में यह जानना अहम है कि आखिर जिस निर्माता ने कभी फिल्म बनाने का सोचा भी नहीं था, वह कैसे हनुमान अंश के निर्माण के लिए तैयार हुईं? स्टीव जॉब्स का नीम करौली बाबा से क्या कनेक्शन रहा है? कैसे जॉब्स ने उनसे मुलाकात के लिए भारत का दौरा करने का फैसला किया? एपल के सह-संस्थापक की इस यात्रा के दौरान क्या हुआ? भारत पर उनके विचार क्या थे?

कैसे निर्माता को मिली हनुमान अंश के निर्माण की प्रेरणा?

कॉलेज के आखिरी साल में जब वे टेक कंपनियों पर रिसर्च कर रही थीं, तब मुझे पता चला कि नीम करौली बाबा ने स्टीव जॉब्स को प्रभावित किया था। जॉब्स को कैंची धाम में ही दुनिया का पहला रंगीन कंप्यूटर बनाने का विचार आया था।

- अनुप्रिया नागर, हनुमान अंश की निर्माता

हनुमान अंश की निर्माता अनुप्रिया नागर ने अलग-अलग साक्षात्कारों में फिल्म के निर्माण से जुड़ने की कहानी बताई है। उन्होंने बताया कि नीम करौली बाबा (महाराज जी) पर फिल्म बनाना एक बड़ा जोखिम था, लेकिन उनका इरादा कभी भी बॉक्स ऑफिस पर भारी कमाई करने का नहीं था।

अनुप्रिया के मुताबिक उन्हें यह बात काफी अजीब लगी कि एक भारतीय संत के बारे में उन्हें किसी विदेशी लेख से जानकारी मिल रही थी। इसके बाद उन्होंने इस विषय पर और रिसर्च करने का फैसला किया जो बाद में फिल्म बनाने का जरिया बना।

फिल्म से हुई कमाई का क्या करेंगी निर्माता?

अनुप्रिया ने साझा किया कि पहले हफ्ते के बाद पूरी फिल्म इंडस्ट्री ने इसे फ्लॉप घोषित कर दिया था, जिससे उनका मनोबल भी टूट गया था। लेकिन दर्शकों और सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर्स के बीच चर्चा के कारण यह रातोंरात एक बड़ा बदलाव लेकर आई, जिसे वे एक चमत्कार मानती हैं। फिल्म की सफलता पर अनुप्रिया ने कहा, 'मैं बहुत खुश हूं कि लोग इसे इतना पसंद कर रहे हैं और देख रहे हैं। मैं केवल 21 साल की हूं और मुझे समझ नहीं आ रहा कि मैं इतने सारे पैसों का क्या करूंगी।' हालांकि, वे कहती हैं कि इस फिल्म से मिले मुनाफे का इस्तेमाल जरूरतमंद बच्चों की मदद और दान के लिए करना चाहती हैं।

फिल्म इसलिए भी अच्छा प्रदर्शन कर रही है, क्योंकि इसका बजट सीमित था (2 करोड़ रुपये से कम)। अगर बजट ज्यादा होता, तो शायद नतीजा ऐसा नहीं होता।

- अनुप्रिया नागर, हनुमान अंश की निर्माता

उन्होंने ने यह भी बताया कि फिल्म के निर्माण में तीन मुख्य निर्माता और सह-निर्माता शामिल थे, और महाराज जी के आशीर्वाद से उनके रास्ते की हर बाधा दूर होती गई।

अनुप्रिया के मुताबिक, जब उन्होंने पहली बार अपने पिता को फिल्म बनाने की बात कही, तो अर्थशास्त्र की छात्रा होने की वजह से उनके पिता फैसले पर काफी हैरान थे। लेकिन जब उन्हें पता चला कि फिल्म नीम करौली बाबा पर है, तो वे तुरंत मान गए और आज वे अपनी बेटी पर बहुत गर्व महसूस करते हैं।

स्टीव जॉब्स का क्या है नीम करौली बाबा से कनेक्शन, जिसने निर्माता को दी प्रेरणा?

साल 1974 में, जॉब्स को वीडियो गेम बनाने वाली कंपनी अटारी में अपनी पहली नौकरी मिली। उसी साल वे आध्यात्मिक स्पष्टता और आत्मज्ञान की खोज में अपने कॉलेज के दोस्त डैन कोटके के साथ भारत की यात्रा पर निकल पड़े। स्टीव जॉब्स की आत्मकथा लिखने वाले वॉल्टर आइजैक्सन के मुताबिक, स्टीव जॉब्स हमेशा से आध्यात्मिक स्पष्टता और ज्ञान/आत्मज्ञान की खोज के लिए पूर्व की तरफ जाना चाहते थे। इसी के चलते उनकी यात्रा का सबसे अहम पड़ाव भारत बना। वे आंतरिक शांति और जीवन के गहरे अर्थों को तलाश रहे थे।

स्टीव जॉब्स भारत में पहली बार नीम करौली बाबा से मिलने आए थे। नीम करौली बाबा को उनके अनुयायी 'महाराज-जी' के नाम से भी पुकारते थे और वे भगवान हनुमान के परम भक्त थे। स्टीव जॉब्स और उनके साथ

सैन फ्रांसिस्को में जन्म और सिलिकॉन वैली तक पहुंच

- स्टीव का जन्म 24 फरवरी 1955 को सैन फ्रांसिस्को में अब्दुलफतह जंदाली और जोआन शिबल के घर हुआ था। तब उन्हें स्टीव पॉल नाम दिया गया था।
- जन्म के तुरंत बाद उन्हें सैन फ्रैंसिस्को के ही रहने वाले पॉल और क्लारा जॉब्स ने गोद ले लिया। इसके बाद आगे चलकर उन्हें नाम मिला- स्टीव जॉब्स।
- स्टीव जॉब्स ने अपनी पढ़ाई बीच में ही छोड़ दी और अगले कुछ साल इलेक्ट्रॉनिक क्षेत्र से जुड़े काम करने के बाद 1974 में पहली नौकरी शुरू की थी।

भारत आने वाले दोस्त डैन कोटके ने राम दास की लोकप्रिय आध्यात्मिक पुस्तक बी हेयर नाउ (Be Here Now) पढ़ी थी। यह किताब उस दौर के अमेरिकी युवाओं को पूर्वी अध्यात्म की ओर आकर्षित कर रही थी। इसी को पढ़कर दोनों दोस्तों के मन में उत्तराखंड के कुमाऊं क्षेत्र में स्थित बाबा के कैंची धाम आश्रम जाने की इच्छा जागी।

भारत में स्टीव जॉब्स को क्या मिला?

जब स्टीव जॉब्स और डैन कोटके 1974 में कैंची आश्रम पहुंचे, तो उन्हें पता चला कि नीम करौली बाबा का कुछ समय पहले, यानी 11 सितंबर 1973 को देहांत हो चुका था। गुरु के महासमाधि लेने के कारण आश्रम लगभग खाली और वीरान था। गुरु से न मिल पाने के बाद, वे एक सूखी नदी के रास्ते पैदल चढ़ाई करते हुए हैदाखान बाबाजी के आश्रम पहुंचे। स्टीव जॉब्स ने भारत में करीब सात महीने बिताए। स्टीव जॉब्स की आत्मकथा के मुताबिक, इस दौरान वे जेब में बहुत कम पैसों के साथ अक्सर नंगे पैर घूमा करते थे। वे मंदिरों में, धर्मशालाओं में या फिर गांवों में स्थानीय परिवारों के साथ रहते थे। उन्होंने उत्तर भारत के हरिद्वार, नैनीताल और मनाली जैसे पवित्र और धार्मिक स्थलों की यात्रा भी की।

इस यात्रा से उन्होंने क्या सीखा और एपल पर इसका क्या असर हुआ?

भारत के ग्रामीण इलाकों के लोगों को करीब से देखने के बाद जॉब्स ने महसूस किया कि वे लोग हमारी (पश्चिमी देशों की) तरह केवल बुद्धि का इस्तेमाल नहीं करते, बल्कि उनका काफी ज्यादा विकसित होता है।

इस यात्रा के दौरान परमहंस योगानंद की लिखी किताब एक योगी की आत्मकथा (Autobiography of a Yogi) उनकी सबसे बड़ी साथी बनी। उन्होंने इसे किशोरावस्था में पहली बार पढ़ा था, भारत यात्रा के दौरान दोबारा पढ़ा और फिर अपनी पूरी जिंदगी में हर साल एक बार इस किताब को जरूर पढ़ते थे।

गुरु से न मिल पाने के बावजूद, कैंची धाम में बिताए वक्त और भारत में सीखी सादगी ने जॉब्स के विचारों को पूरी तरह बदल दिया। इसके बाद वे जेन बौद्ध धर्म के विचारों से भी गहरे प्रभावित हुए, जहां से उन्हें सीख मिली कि सादगी ही अंतिम परिष्कार है। यही सीख आगे चलकर एपल की मिनिमलिस्ट डिजाइन फिलॉसफी यानी सादगी से भरे और सुंदर उत्पादों का मुख्य आधार बनी।

बताया जाता है कि जब जॉब्स भारत से अमेरिका लौटे, तो शारीरिक रूप से काफी कमजोर और दुबले हो चुके थे और उनके भीतर एक तीव्र अंतर्ज्ञान का विकास हो चुका था। जॉब्स का मानना था कि भारत यात्रा की इस सीख ने सादगी और डिजाइन को लेकर उनके दृष्टिकोण को हमेशा के लिए बदल दिया।

हनुमान अंश की सफलता सवाल-जवाब में

1. फिल्म 'हनुमान अंश' की बॉक्स ऑफिस सफलता क्या है और इसका बजट कितना था?

फिल्म 'हनुमान अंश' 2 करोड़ रुपये से भी कम के सीमित बजट में बनी है। शुरुआती 20 दिनों में इसने केवल 12 करोड़ रुपये कमाए थे, लेकिन दर्शकों की जुबानी चर्चा (वर्ड ऑफ माउथ) के दम पर अगले 10 दिनों में 88 करोड़ रुपये कमाकर फिल्म ने 30 दिनों में 100 करोड़ रुपये का आंकड़ा पार कर लिया।

2. 21 साल की निर्माता अनुप्रिया नागर को यह फिल्म बनाने की प्रेरणा कैसे मिली?

कॉलेज के आखिरी साल में टेक कंपनियों पर रिसर्च करते समय अनुप्रिया को पता चला कि स्टीव जॉब्स नीम करौली बाबा से काफी प्रभावित थे और उन्हें कैंची धाम में ही दुनिया का पहला रंगीन कंप्यूटर बनाने का विचार आया था। एक विदेशी लेख से भारतीय संत के प्रभाव के बारे में जानकर उन्होंने रिसर्च शुरू की और इसी से फिल्म बनाने की प्रेरणा मिली।

3. स्टीव जॉब्स 1974 में भारत और कैंची धाम क्यों आए थे?

आध्यात्मिक स्पष्टता और आत्मज्ञान की तलाश में स्टीव जॉब्स अपने दोस्त डैन कोटके के साथ भारत आए थे। राम दास की पुस्तक 'बी हियर नाउ' पढ़कर वे भगवान हनुमान के परम भक्त नीम करौली बाबा से मिलने कैंची धाम आश्रम पहुंचे थे, हालांकि वहां पहुंचने पर उन्हें पता चला कि बाबा का देहांत कुछ समय पहले (11 सितंबर 1973) हो चुका था।

4. भारत यात्रा और कैंची धाम का Apple के डिजानइन पर क्या प्रभाव पड़ा?

भारत यात्रा के दौरान जॉब्स ने महसूस किया कि भारतीय ग्रामीणों का अंतर्ज्ञान (Intuition) पश्चिमी बुद्धि से कहीं अधिक गहरा है। परमहंस योगानंद की 'एक योगी की आत्मकथा' और जेन बौद्ध धर्म के सादगी वाले विचारों ने उन पर गहरा असर डाला, जो बाद में Apple के उत्पादों की मिनिमलिस्ट (साधारण और सुंदर) डिज़ाइन फिलॉसफी का आधार बना।

5. फिल्म 'हनुमान अंश' की कमाई का उपयोग निर्माता किस काम के लिए करेंगी?

निर्माता अनुप्रिया नागर ने साझा किया है कि फिल्म से होने वाले मुनाफे का इस्तेमाल वे जरूरतमंद बच्चों की मदद और विभिन्न सामाजिक व धार्मिक कार्यों में दान के लिए करेंगी।

सड़क किनारे उगने वाली 8 प्रकार की घासें, जो मूल्यवान औषधीय पौधे हैं

प्रकृति की अनमोल औषधशाला को पहचानने की जरूरत

हमारे आसपास प्रकृति हर पल कुछ न कुछ देती रहती है, लेकिन हम अक्सर उसकी अनमोल देन को पहचान नहीं पाते। सड़क के किनारे, खेतों की मेड़ों, खाली भूखंडों और बरसाती जमीन पर उगने वाली घासों को सामान्यत: हम खरपतवार समझकर नजरअंदाज कर देते हैं। आश्चर्य की बात यह है कि इनमें से अनेक पौधे पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों और आयुर्वेद में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं।

भारत की समृद्ध वनस्पति परंपरा में ऐसे अनेक पौधों का उल्लेख मिलता है, जिनका उपयोग सदियों से लोकचिकित्सा और आयुर्वेद में होता आया है। हालांकि किसी भी पौधे को औषधि के रूप में स्वयं प्रयोग करने के बजाय योग्य आयुर्वेदाचार्य या चिकित्सक की सलाह लेना आवश्यक है।

आइए जानते हैं सड़क किनारे अथवा आसपास सहज रूप से दिखाई देने वाले आठ महत्वपूर्ण औषधीय पौधों के बारे में।

1. दूब घास – छोटी सी घास, बड़ा महत्व

दूब या दूर्वा घास हमारे देश में अत्यंत सामान्य रूप से पाई जाती है।

धार्मिक दृष्टि से भी इसका विशेष महत्व है। भगवान गणेश की पूजा में दूर्वा अर्पित करने की परंपरा इसके सांस्कृतिक महत्व को दर्शाती है। आयुर्वेदिक एवं लोकपरंपराओं में दूब का उपयोग रक्तस्राव, घाव और कुछ मूत्र संबंधी समस्याओं के लिए किया जाता रहा है। इसे शीतल प्रकृति वाला पौधा भी माना जाता है। साधारण दिखाई देने वाली दूब वास्तव में हमारी जैव विविधता का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

2. कांस — बरसात के बाद खिलने वाली सफेद सुंदरता: कांस घास बरसात के बाद अपने सफेद पुष्पगुच्छों के कारण दूर से ही पहचान में आ जाती है। ग्रामीण और प्राकृतिक परिवेश में इसकी सुंदरता मन मोह लेती है। परंपरागत चिकित्सा में कांस की जड़ों का उपयोग शीतल एवं मूत्रवर्धक प्रकृति वाले द्रव्यों के रूप में बताया गया है। हालांकि इसके औषधीय उपयोग के लिए उचित वनस्पति पहचान और विशेषज्ञ मार्गदर्शन आवश्यक है।

3. नागरमोथा — मिट्टी में छिपा औषधीय खजाना: नागरमोथा अर्थात मुथा घास देखने में सामान्य लगती है, लेकिन इसकी भूमिगत गांठदार

जड़ें औषधीय दृष्टि से महत्वपूर्ण मानी जाती हैं। आयुर्वेद में नागरमोथा का प्रयोग पाचन संबंधी समस्याओं, पेट की असुविधा तथा कुछ अन्य पारंपरिक औषधीय संयोजनों में किया जाता है। इसकी विशिष्ट सुगंध और गुणों के कारण यह अनेक आयुर्वेदिक तैयारियों में स्थान पाती है। यह उदाहरण बताता है कि पौधे की असली उपयोगिता हमेशा उसकी बाहरी सुंदरता से नहीं आंकी जा सकती।

4. कुश घास — धार्मिक परंपरा से औषधीय उपयोग तक: कुश घास का भारतीय संस्कृति में अत्यंत प्राचीन महत्व है। धार्मिक अनुष्ठानों, यज्ञ

और वैदिक परंपराओं में इसका उल्लेख मिलता है। आयुर्वेदिक परंपरा में भी कुश को उपयोगी वनस्पति माना गया है। विशेष रूप से इसकी जड़ के पारंपरिक औषधीय उपयोग का उल्लेख मिलता है। कुश हमें यह संदेश देती है कि भारतीय संस्कृति में प्रकृति और मानव जीवन का संबंध केवल उपयोगिता तक सीमित नहीं रहा, बल्कि आध्यात्मिकता से भी जुड़ा रहा है।

5. भृंगराज — बालों की देखभाल से आगे: बरसात के मौसम में खेतों और नम स्थानों के आसपास दिखाई देने वाला भृंगराज एक महत्वपूर्ण औषधीय पौधा है। आयुर्वेद में इसका विशेष स्थान है। भृंगराज का नाम आते ही सामान्यत: बालों और तेल की याद आती है। पारंपरिक रूप से इसका उपयोग बालों की देखभाल के साथ-साथ यकृत संबंधी औषधीय तैयारियों में भी किया जाता रहा है।

इसका महत्व केवल सौंदर्य प्रसाधनों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह भारतीय औषधीय वनस्पति परंपरा का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

6. मकोय — अनदेखा किया जाने वाला उपयोगी पौधा: मकोय एक छोटा पौधा है, जिस पर छोटे-छोटे फल लगते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में यह आसानी से दिखाई दे सकता है। आयुर्वेदिक परंपरा में मकोय का उल्लेख यकृत संबंधी समस्याओं, सूजन तथा कुछ अन्य विकारों में उपयोग होने वाले औषधीय द्रव्य के रूप में मिलता है। लेकिन इसकी पहचान करते समय विशेष सावधानी जरूरी है, क्योंकि कई जंगली पौधों की पहचान सामान्य व्यक्ति के लिए कठिन हो सकती है।

7. पुनर्नवा — नाम में ही छिपा संदेश: पुनर्नवा भारतीय औषधीय परंपरा का अत्यंत चर्चित पौधा है। इसका नाम ही अपने भीतर नवीनीकरण का भाव समेटे हुए है। आयुर्वेद में पुनर्नवा का उपयोग विशेष रूप से सूजन और शरीर में अतिरिक्त द्रव से संबंधित पारंपरिक औषधीय तैयारियों में किया जाता है। इसे मूत्रवर्धक गुणों वाला पौधा भी माना जाता है। आज जब जीवनशैली से जुड़ी समस्याएँ बढ़ रही हैं, तब पारंपरिक औषधीय वनस्पतियों पर वैज्ञानिक अध्ययन का महत्व और बढ़ जाता है।

8. अपामार्ग या चिरचिटा — रास्तों का अनजाना साथी: अपामार्ग, जिसे ग्रामीण क्षेत्रों में चिरचिटा भी कहा जाता है, सड़क किनारे और खाली स्थानों पर सहज रूप से उगता दिखाई दे सकता है। इसके बीज और पुष्पक्रम कपड़ों से

चिपक जाते हैं, इसलिए यह आसानी से पहचाना जाता है। आयुर्वेदिक परंपरा में अपामार्ग का उपयोग कफ, खाँसी, पाचन और कुछ त्वचा संबंधी समस्याओं के लिए विभिन्न औषधीय रूपों में बताया गया है। एक समय जो पौधा लोगों को केवल कपड़ों से चिपकने वाला खरपतवार लगता था, वही हमारे पारंपरिक औषधीय ज्ञान में महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

खरपतवार नहीं, प्रकृति की धरोहर-

इन आठ पौधों की चर्चा केवल उनके औषधीय महत्व तक सीमित नहीं है। इनका संरक्षण हमारी जैव विविधता और पारंपरिक ज्ञान के संरक्षण से भी जुड़ा हुआ है। आज सड़कों का विस्तार, शहरीकरण, भूमि का बदलता उपयोग और रासायनिक खरपतवारनाशकों का अत्यधिक प्रयोग अनेक स्थानीय वनस्पतियों के अस्तित्व के लिए चुनौती बन रहा है। यदि हर अनचाहे पौधे को केवल खरपतवार मानकर नष्ट कर दिया जाएगा, तो आने वाली पीढ़ियाँ प्रकृति की इस जीवित विरासत से वंचित हो सकती हैं। हमें आवश्यकता है कि विद्यालयों, महाविद्यालयों और सामाजिक संस्थाओं के माध्यम से स्थानीय औषधीय वनस्पतियों की पहचान और संरक्षण के प्रति जागरूकता पैदा की जाए। साथ ही पारंपरिक दावों को आधुनिक वैज्ञानिक अनुसंधान के माध्यम से प्रमाणित करने की दिशा में भी गंभीर प्रयास होने चाहिए।

प्रकृति को पहचानिए, लेकिन सावधानी के साथ-

यह समझना जरूरी है कि किसी पौधे का पारंपरिक औषधीय उपयोग होना यह प्रमाणित नहीं करता कि वह हर व्यक्ति के लिए सुरक्षित या प्रभावी है। गलत पौधे की पहचान, गलत मात्रा या गलत तरीके से सेवन नुकसानदायक हो सकता है। इसलिए औषधीय उपयोग के लिए प्रशिक्षित आयुर्वेद विशेषज्ञ अथवा चिकित्सक की सलाह आवश्यक है।

- सत्य भूषण शर्मा
प्रवक्ता, पत्रकार, लेखक,
कवि एवं यूट्यूबर
बी-107, दिव्य ज्योति

दूसरों की चमकती जिंदगी में खुद को तलाशते बच्चे

बचपन कभी चीजों का हिसाब नहीं रखता था; अब उसे सिखाया जा रहा है कि उसकी पहचान भी चीजों से बनती है। किसके पास महँगा फोन है, किसके कपड़े बेहतर हैं, कौन कहाँ घूमकर आया, किसके घर में कैसी सुविधा है—तुलना की यह दौड़ बच्चों के मन तक पहुँच गई है। स्क्रीन पर हर ओर चमकता जीवन दिखाई देता है—महँगे फोन, कपड़े, कारें, यात्राएँ, पार्टियाँ, शानदार घर और मुस्कुराते चेहरे। धीरे-धीरे बच्चा मानने लगता है कि सुख वही है जो दूसरों के पास है और वह तभी महत्वपूर्ण है, जब उसके पास भी वैसा ही जीवन हो। यहीं से कमी वस्तुओं में नहीं, मन में पैदा होने लगती है।

अब बच्चे अपने जीवन को अपनी आँखों से कम, दूसरों की दिखाई हुई जिंदगी से अधिक देखने लगे हैं। कभी तुलना पड़ोस तक थी, आज पूरी दुनिया उनके सामने है। सोशल मीडिया का अदृश्य आईना हर दूसरे व्यक्ति को अधिक सुंदर, सफल और खुश दिखाता है। फिर मन पूछता है— 'उसके पास यह है, मेरे पास क्यों नहीं?' माता-पिता की आर्थिक क्षमता जहाँ इच्छाओं की सीमा तय करती है, इंटरनेट वहाँ कोई सीमा नहीं छोड़ता। धीरे-धीरे किसी चीज का अभाव बच्चे को अपने भीतर का अभाव लगने लगता है; उसे लगता है कि वह पीछे है, कम है, अधूरा है। जबकि सच यह है कि बच्चे की कीमत उसके जूते, फोन, कपड़ों या घर की कीमत से नहीं आँकी जा सकती।

स्क्रीन की दुनिया बच्चे को केवल दृश्य नहीं देती, वह उसके मन के लिए नए पैमाने भी गढ़ती है। साइबर बुलिंग के ताने, उपहास और अपमान स्क्रीन पर खत्म नहीं होते; वे भीतर उतरकर आत्मविश्वास को चोट पहुँचाते हैं। फिल्टर और संपादित तस्वीरें चेहरे और शरीर की ऐसी कृत्रिम कसौटी बनाती हैं, जिस पर लड़के-लड़कियाँ अपने वास्तविक रूप को तौलने लगते हैं। ऑनलाइन गेमिंग और लगातार स्क्रीन से जुड़े रहना नींद, एकाग्रता और दिनचर्या को प्रभावित कर सकता है। आभासी दुनिया की जीत में डूबा बच्चा धीरे-धीरे उस वास्तविक दुनिया से दूर होने लगता है, जहाँ उसके रिश्ते, सपने और जीवन सचमुच मौजूद हैं।

एक बच्चे के भविष्य पर फैसला सुनाने के लिए हमने एक प्रश्नपत्र को इतनी ताकत दे दी है कि उसके सामने बचपन, सपने और संभावनाएँ छोटे पड़ने लगे हैं। कोचिंग की भीड़, रैंक की होड़, अंकों का दबाव और माता-पिता की अपेक्षाएँ असफलता को सामान्य पड़ाव नहीं, अंतिम फैसला बना देती हैं। कोटा जैसे शहरों की घटनाएँ इस संकट का कठोर चेहरा दिखाती हैं। हमें पूछना होगा—भविष्य की तैयारी के नाम पर कहीं हमने बच्चों का वर्तमान और बचपन तो नहीं छीन लिया? परीक्षा केवल योग्यता की कसौटी है, जिंदगी की नहीं। एक परिणाम किसी सपने की राह बदल सकता है, लेकिन किसी बच्चे की संभावनाओं पर पूर्णविराम नहीं लगा सकता।

घर में दरवाजे होते हैं, पर बच्चों के मन के दरवाजे धीरे-धीरे बंद हो जाएँ तो कोई आवाज सुनाई नहीं देती। माता-पिता काम में, बच्चे स्कूल और कोचिंग में—एक ही छत के नीचे रहते हुए भी सब अपनी-अपनी दुनिया में सिमटते जाते हैं। कभी परिवार साथ बैठकर खाना खाता और बातें करता था; अब कई बार संवाद संदेशों में रह गया है। माता-पिता पूछते हैं— 'क्या हुआ?' बच्चा कहता है— 'कुछ नहीं।' इस 'कुछ नहीं' को सुनना जरूरी है। बच्चों को हर बार समाधान नहीं चाहिए; कई बार उन्हें बस ऐसा अपना चाहिए, जो बिना टोके, बिना परखे उनकी बात सुन ले। उन्हें यह भरोसा चाहिए कि घर वह जगह है जहाँ वे सफलता ही नहीं, अपनी हार, डर और कमजोरी लेकर भी लौट सकते हैं।

बच्चे के कंधों पर आज बस्ते के साथ आने वाले कल का डर भी है। एआई नौकरियाँ बदल देगा तो हमारा क्या होगा? बढ़ती महँगाई, जलवायु संकट और बदलती दुनिया के सवाल उनके मन में भय भर रहे हैं। इस डर में वे परिवार से दूर होने लगते हैं, क्योंकि उन्हें लगता है कि बड़े उनकी दुनिया समझ नहीं सकते। यह दूरी टूटनी चाहिए। माता-पिता को हर सवाल का जवाब नहीं, बच्चे के पास बैठना जरूरी है। सलाह बाद में, पहले हाथ थामा जा सकता है। शिक्षक, अभिभावक और समाज बच्चे के व्यवहार में आए गंभीर बदलावों को अनदेखा न करें। जरूरत हो तो भरोसेमंद वयस्क या मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञ की मदद लेना कमजोरी नहीं, जिम्मेदारी है।

दूसरों की रोशनी में अपना चेहरा मत तलाशो। स्क्रीन पर दिखने वाली जिंदगी पूरी जिंदगी नहीं होती; वहाँ दिखाई देने वाली चमक तुम्हारी रोशनी कम नहीं करती। किसी के अधिक अंक तुम्हारा मूल्य नहीं घटाते, न किसी की महँगी चीजें तुम्हारे जीवन को छोटा बनाती हैं। सोशल मीडिया से थोड़ा दूर हटो; प्रकृति, किताब, खेल, संगीत या चित्रकारी जैसे कामों में लौटो—ऐसे काम, जिनमें किसी को प्रभावित करने की जरूरत न हो। और जब मन में तूफान उठे, चुप मत रहो। माँ-पिता, शिक्षक, रिश्तेदार या किसी भरोसेमंद व्यक्ति से कहो— 'मैं ठीक महसूस नहीं कर रहा हूँ।' यह कमजोरी नहीं, अपने जीवन के पक्ष में उठाया गया साहस है।

बच्चों को आगे बढ़ाना जरूरी है, लेकिन पहले उन्हें भरोसा दें कि पीछे रह जाने पर भी वे हमारे अपने हैं। फोन पुराने होंगे, फैशन बदलेंगे, अंक भूल जाएंगे और लाइक्स का शोर थम जाएगा; मगर आत्मसम्मान और रिश्ते साथ रहेंगे। बच्चे से यह मत कहिए कि वह तभी खास है जब जीते; उसे कहिए—हार में भी उसकी जगह हमारे दिल में उतनी ही है। वह किसी ब्रांड, नंबर या स्क्रीन से बड़ा है। जिंदगी की असली जीत दुनिया की नजर में बड़ा दिखना नहीं, अपनी नजर में खुद को छोटा न होने देना है। और बच्चों, अगर कभी अँधेरा लगे, तो उसे अंतिम सच मत मानना। रात के बाद सुबह होती है। चुप मत रहना—बोलना, किसी भरोसेमंद इंसान का हाथ थामना और जरूरत हो तो मदद माँगना।

कृति आरके जैन
शिक्षाविद्
बड़वानी (मप्र)
ईमेल: kratijainemail@gmail.com

शिक्षक : भविष्य की दिशा और शिक्षा का नया स्वरूप

शिक्षा का स्वरूप आज जिस तीव्र गति से बदल रहा है, वैसा परिवर्तन शायद पहले कभी देखने को नहीं मिला। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डिजिटल तकनीक, ऑनलाइन शिक्षण, आभासी कक्षाएँ और नई शिक्षण पद्धतियाँ सीखने की प्रक्रिया को नया आकार दे रही हैं। बच्चे आज किसी भी विषय की जानकारी कुछ ही क्षणों में प्राप्त कर सकते हैं। ऐसे समय में यह प्रश्न स्वाभाविक है कि जब ज्ञान और सूचना इतनी सहजता से उपलब्ध है, तब शिक्षक की भूमिका क्या रह जाएगी? वास्तव में तकनीक के विस्तार ने शिक्षक की भूमिका को कम नहीं किया, बल्कि उसे और अधिक महत्वपूर्ण बना दिया है। आने वाले समय में शिक्षक केवल ज्ञानदाता नहीं, बल्कि जीवन-दृष्टा, मार्गदर्शक, प्रेरक और मानवीय मूल्यों के संरक्षक होंगे।

परम्परागत रूप से शिक्षक की भूमिका पुस्तकों और पाठ्यक्रम के अध्ययन-अध्यापन तक मानी जाती रही है। लेकिन आज यह भूमिका कहीं व्यापक हो चुकी है। शिक्षक विद्यार्थियों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्हें केवल परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करने के लिए तैयार करना पर्याप्त नहीं है। उन्हें जीवन की चुनौतियों का सामना करना, सही और गलत के बीच अंतर समझना, असफलताओं से सीखना, दूसरों के प्रति संवेदनशील रहना और कठिन परिस्थितियों में संतुलित निर्णय लेना भी सिखाना आवश्यक है।

- डॉ. सत्यवान सौरभ,
कवि, सामाजिक विचारक एवं स्तंभकार,
आकाशवाणी एवं टीवी पेनालिस्ट,
333, परी वाटिका, कौशल्या भवन,
बड़वा (सिवानी) भिवानी,
हरियाणा - 127045, मोबाइल
:9466526148,01255281381

डिजिटल युग ने ज्ञान की सीमाएँ लगभग समाप्त कर दी हैं। इंटरनेट और डिजिटल मंचों ने सूचना का विशाल संसार विद्यार्थियों के हाथों में पहुँचा दिया है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता कुछ ही सेकंड में किसी प्रश्न का उत्तर दे सकती है। लेकिन सूचना और ज्ञान में अंतर है तथा ज्ञान और विवेक में उससे भी बड़ा अंतर है। किसी प्रश्न का उत्तर जान लेना अलग बात है और उस उत्तर का जीवन में उचित उपयोग करना अलग। तकनीक जानकारी उपलब्ध करा सकती है, पर उसका विवेकपूर्ण उपयोग, नैतिकता और मानवीय दृष्टिकोण शिक्षक ही विकसित कर सकते हैं।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के बढ़ते प्रभाव और रोबोटिकी तथा स्वचालन के विस्तार के साथ रोजगार और कौशल की दुनिया भी बदल रही है। आने वाले वर्षों में अनेक पारम्परिक कार्यों का स्वरूप बदलेगा। ऐसे समय में शिक्षा की चुनौती केवल यह नहीं होगी कि विद्यार्थी क्या जानते हैं, बल्कि यह भी होगी कि वे बदलती परिस्थितियों के अनुसार कितना सीख सकते हैं, कितना सोच सकते हैं और समस्याओं का समाधान किस प्रकार कर सकते हैं। इसलिए भविष्य का शिक्षक स्वयं भी निरन्तर सीखने वाला होगा। जो शिक्षक समय के साथ अपने ज्ञान, तकनीकी दक्षता और शिक्षण-पद्धति को अद्यतन करेंगे, वही विद्यार्थियों को भविष्य के लिए बेहतर तैयार कर पाएँगे। आज सबसे बड़ी आवश्यकता शिक्षा और कौशल के बीच संतुलन स्थापित करने की है। केवल उपाधियाँ प्राप्त कर लेना जीवन की सफलता की गारंटी नहीं है। संवाद कौशल, समस्या-समाधान क्षमता, रचनात्मक सोच, निर्णय लेने की क्षमता, सहयोग की भावना और सहानुभूति जैसे गुण भी उतने ही आवश्यक हैं। शिक्षक को विद्यार्थियों में इन क्षमताओं का विकास करना होगा, ताकि वे केवल अच्छे विद्यार्थी नहीं, बल्कि जिम्मेदार और संवेदनशील नागरिक बन सकें।

भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में शिक्षक की भूमिका और भी व्यापक हो जाती है। यहाँ शिक्षा केवल रोजगार प्राप्त करने का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक एकता, लोकतांत्रिक चेतना, सांस्कृतिक समझ और राष्ट्रीय चरित्र निर्माण का आधार भी है। शिक्षक विद्यार्थियों को उनकी संस्कृति, परम्पराओं और मूल्यों से जोड़ते हुए उनमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण और संवैधानिक मूल्यों का विकास कर सकते हैं। विद्यालय की कक्षा वास्तव में भविष्य के समाज की प्रयोगशाला है। तकनीक के इस दौर में शिक्षक की सबसे बड़ी शक्ति उसकी मानवीय संवेदना है। पुस्तक ज्ञान दे सकती है, इंटरनेट सूचना दे सकता है और कृत्रिम बुद्धिमत्ता उत्तर दे सकती है, लेकिन किसी विद्यार्थी की आँखों में छिपी निराशा को पहचानना, उसकी असफलता में उसका मनोबल बढ़ाना और उसे फिर से प्रयास करने की प्रेरणा देना शिक्षक ही कर सकता है। मशीन विद्यार्थी के प्रश्न का उत्तर दे सकती है, लेकिन उसके मौन का अर्थ समझना अभी भी मानवीय संवेदना का विषय है। आज परिवारों की संरचना और जीवनशैली में भी बदलाव आया है। संयुक्त परिवारों का स्वरूप सीमित हो रहा है और अनेक बच्चों को पहले की तरह परिवार के बुजुर्गों का निरन्तर मार्गदर्शन नहीं मिल पाता। ऐसे समय में शिक्षक का दायित्व और बढ़ जाता है। विद्यालय केवल पाठ पढ़ाने का स्थान नहीं, बल्कि बच्चों के व्यक्तित्व और जीवन-दृष्टि को आकार देने का स्थान भी है। एक संवेदनशील शिक्षक विद्यार्थी के भीतर आत्मविश्वास, अनुशासन, धैर्य और जिम्मेदारी जैसे गुण विकसित कर सकता है।

शिक्षा का उद्देश्य केवल परीक्षा उत्तीर्ण करना नहीं होना चाहिए। शिक्षा वह शक्ति है जो व्यक्ति को प्रश्न करना, तर्क करना, निर्णय लेना और परिस्थितियों का सामना करना सिखाती है। शिक्षा मनुष्य को केवल सक्षम नहीं, बल्कि विवेकशील और संवेदनशील भी बनाती है। यदि विद्यार्थी ऊँची उपाधियाँ तो प्राप्त कर लें, लेकिन उनमें करुणा, नैतिकता और सामाजिक जिम्मेदारी का अभाव हो, तो शिक्षा अपने वास्तविक उद्देश्य से दूर हो जाती है। समाज में सकारात्मक परिवर्तन की सबसे मजबूत कड़ी शिक्षक हैं। एक शिक्षक एक विद्यार्थी को बदलता है, विद्यार्थी परिवार को प्रभावित करता है और परिवार समाज को। इस प्रकार शिक्षक का प्रभाव एक पूरी पीढ़ी तक पहुँचता है। किसी राष्ट्र का भविष्य केवल संसदों, नीतियों और योजनाओं में नहीं बनता; उसका वास्तविक निर्माण कक्षाओं में होता है। कक्षा में बैठा विद्यार्थी ही आने वाले समय का वैज्ञानिक, चिकित्सक, प्रशासक, शिक्षक, जनप्रतिनिधि, उद्यमी और नागरिक बनेगा।

भारतीय परम्परा में गुरु को सदैव विशेष सम्मान दिया गया है। गुरुकुल परम्परा से लेकर आधुनिक विश्वविद्यालयों तक गुरु-शिष्य संबंध ने ज्ञान के साथ संस्कारों की परम्परा को भी आगे बढ़ाया है। समय बदल गया है, शिक्षा के साधन बदल गए हैं और तकनीक ने अध्यापन की शैली बदल दी है, लेकिन गुरु की मूल भूमिका आज भी वही है—अज्ञान से ज्ञान की ओर और भ्रम से विवेक की ओर ले जाना। शिक्षक दिवस केवल शिक्षकों को सम्मान देने का अवसर नहीं, बल्कि शिक्षा के उद्देश्य पर पुनर्विचार करने का भी दिन है। हमें यह विचार करना होगा कि हम अपने बच्चों को केवल प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार कर रहे हैं या जीवन के लिए भी। क्या हम उन्हें केवल सफल बनाना चाहते हैं या अच्छा इंसान भी? इन प्रश्नों का उत्तर हमारी शिक्षा व्यवस्था के भविष्य की दिशा तय करेगा। आने वाले आठ-दस वर्षों में शिक्षा के क्षेत्र में तकनीकी परिवर्तन और अधिक तेज होंगे। कृत्रिम बुद्धिमत्ता विद्यार्थियों की सीखने की गति को बढ़ाएगी, व्यक्तिगत शिक्षण को संभव बनाएगी और शिक्षकों के अनेक प्रशासनिक कार्यों को सरल करेगी। लेकिन इस परिवर्तन के बीच शिक्षक की मानवीय भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण होगी। भविष्य में शिक्षक का मूल्य इस बात से नहीं आँका जाएगा कि वह कितनी जानकारी याद करवा सकता है, बल्कि इस बात से कि वह विद्यार्थी को कितना सोचने, समझने, प्रश्न करने और बेहतर मनुष्य बनने के लिए प्रेरित कर सकता है।

ईओएस-05 : भारत की आकाश में आंख

-डॉ. प्रियंका सौरभ,
पीएचडी (राजनीति विज्ञान),
कवयित्री एवं सामाजिक चिंतक हैं।)

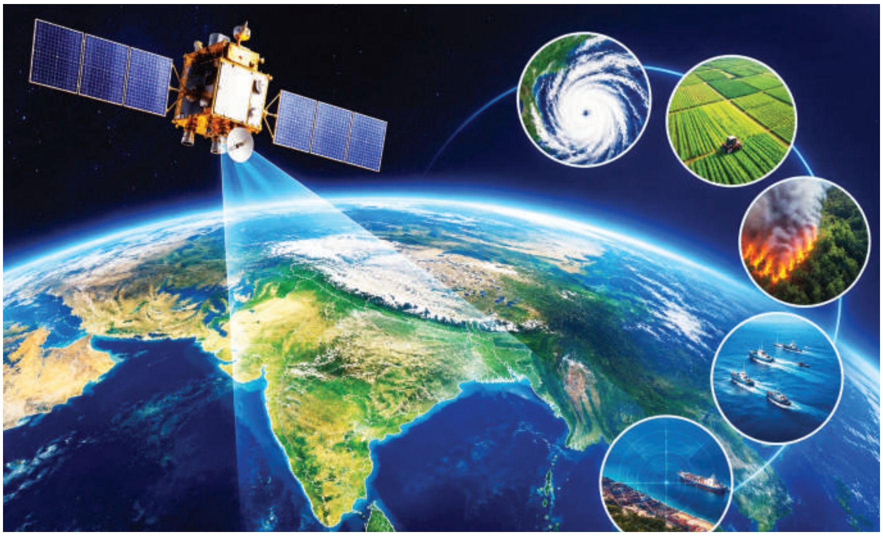

पृथ्वी अवलोकन उपग्रह अब शासन व्यवस्था, आपदा राहत, कृषि क्षेत्र, पर्यावरण संरक्षण और राष्ट्रीय सुरक्षा में आवश्यक उपकरण बन गए हैं। ये उपग्रह पृथ्वी की सतह, वायुमंडल और महासागरों के बारे में दूरस्थ संवेदन डेटा प्रदान करते हैं और सरकारों को उन परिवर्तनों पर नज़र रखने में मदद करते हैं जिन्हें जमीनी प्रणालियों द्वारा आसानी से पता नहीं लगाया जा सकता है। भारत में पृथ्वी अवलोकन मिशन वर्षों से अच्छी तरह स्थापित है और GSLV-F17 पर EOS-05 का प्रक्षेपण इसकी क्षमता को बढ़ाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि इसकी भू-तुल्यकालिक कक्षा से इमेजिंग करने की क्षमता भारतीय क्षेत्र का बार-बार अवलोकन करने में सक्षम बनाती है।

EOS-05 का प्रक्षेपण उपग्रह रिमोट सेंसिंग की प्रकृति में बदलाव का एक हिस्सा है। पृथ्वी अवलोकन परंपरागत रूप से निम्न पृथ्वी कक्षा (LEO) में संचालित उपग्रहों का एक प्रमुख अनुप्रयोग रहा है। ये उपग्रह अत्यंत विस्तृत चित्र प्रदान करेंगे, लेकिन इनकी कक्षा के कारण ये केवल नियमित समय अंतराल पर एक विशिष्ट क्षेत्र के ऊपर से गुजरेंगे। यह आवधिक आधार पर कवरेज के लिए बहुत उपयोगी है, लेकिन तेजी से बदलती परिस्थितियों में यह और भी उपयोगी हो सकता है। इन प्रणालियों को एक भू-तुल्यकालिक इमेजिंग उपग्रह द्वारा पूरक किया जा सकता है जो एक बड़े क्षेत्र का लंबे समय तक अवलोकन कर सकता है।

यह विशेष रूप से तब महत्वपूर्ण हो जाता है जब घटनाएँ दिनों के बजाय घंटों की अवधि में घटित होती हैं। चक्रवात अचानक तीव्र हो सकते हैं या दिशा बदल सकते हैं, बाढ़ व्यापक क्षेत्र में फैल सकती है, जंगल की आग बुझ सकती है या बेकाबू हो सकती है और समुद्री गतिविधियाँ निरंतर परिवर्तनशील अवस्था में हो सकती हैं। उपग्रहों से लगातार अवलोकन द्वारा ऐसी घटनाओं के बारे में अधिक गतिशील जानकारी अधिकारियों को प्रदान की जा सकती है। इसलिए, पृथ्वी अवलोकन प्रणाली की संरचना में EOS-05 को LEO उपग्रहों के पूरक तत्व के रूप में देखा जाना चाहिए। LEO उपग्रहों का उपयोग विस्तृत चित्र प्राप्त करने के लिए किया जा सकता है और भू-तुल्यकालिक उपग्रह अधिक स्थिरता और निरंतरता प्रदान कर सकते हैं। भारत जैसे विविधतापूर्ण और आपदा-ग्रस्त देश के लिए यह क्षमता अत्यंत महत्वपूर्ण है। चक्रवात, बाढ़, भूस्खलन और वन अग्नि जैसी प्राकृतिक आपदाएँ देश को लगातार प्रभावित करती हैं। प्रभावी आपदा प्रबंधन के लिए प्रारंभिक चेतावनी, त्वरित आकलन और निरंतर निगरानी आवश्यक हैं। बार-बार उपग्रह द्वारा किए गए अवलोकन से अधिकारियों को आपदा की स्थिति के विकास का आकलन करने और प्रभावित क्षेत्रों का शीघ्र पता लगाने में सहायता मिल सकती है। उपग्रह चित्र बाढ़ के दौरान जलमग्न क्षेत्रों का मानचित्रण करने में भी सहायक हो सकते हैं। वन अग्नि की स्थिति में, नियमित निगरानी जले हुए क्षेत्रों में होने वाले परिवर्तनों की निगरानी में उपयोगी हो सकती है। यह निगरानी चक्रवातों के दौरान बदलते मौसम को समझने में भी सहायक हो सकती है।

लेकिन तस्वीरों का महत्व तभी तक है जब तक उन्हें उपयोगी उत्पाद में परिवर्तित करने में समय और कुशलता बरती जाए। दरअसल, भारत के लिए असली चुनौती उपग्रह प्रेक्षणों को आपदा प्रबंधन प्लेटफार्मों का अभिन्न अंग बनाना है ताकि प्रशासकों, आपदा प्रबंधन एजेंसियों और स्थानीय अधिकारियों को वास्तविक समय में और आसानी से उपयोग किए जा सकने वाले प्रारूप में जानकारी मिल सके। इसका उद्देश्य डेटा संग्रहण और निर्णय लेने के बीच की दूरी को कम करना है।

ईओएस-05 और भारत की समग्र अंतरिक्ष पृथ्वी अवलोकन क्षमता से लाभान्वित होने वाला एक अन्य क्षेत्र कृषि है। भारत में जमीनी स्तर पर कृषि परिदृश्य की नियमित निगरानी चुनौतीपूर्ण और संसाधन-प्रधान है। उपग्रह अवलोकन वनस्पति, फसल की स्थिति और भूमि उपयोग में परिवर्तन जैसे कृषि संकेतकों के मूल्यांकन में सहायक हो सकते हैं। उपग्रह चित्रों का उपयोग मौसम डेटा, मृदा डेटा और जमीनी अवलोकनों के साथ मिलकर फसलों में तनाव के विकास और बदलते पर्यावरणीय परिस्थितियों का पता लगाने में किया जा सकता है। जैसे-जैसे एआई का उपयोग बढ़ेगा, यह प्रक्रिया और भी अधिक प्रभावी हो सकती है। आधुनिक उपग्रहों द्वारा भेजे गए डेटा की मात्रा बहुत अधिक होने के कारण, केवल मैन्युअल व्याख्या करना बहुत कठिन होता जा रहा है। एआई-आधारित प्रणालियाँ छवियों को तेज़ी से संसाधित कर सकती हैं, विसंगतियों का पता लगा सकती हैं और तत्काल ध्यान देने योग्य क्षेत्रों को चिह्नित कर सकती हैं। ये प्रौद्योगिकियाँ फसल मूल्यांकन, आपदा मानचित्रण और पर्यावरण निगरानी में तेजी लाने में मदद कर सकती हैं और मैन्युअल विश्लेषण में लगने वाले समय को कम कर सकती हैं।

निरंतर अवलोकन के लाभ पर्यावरणीय दृष्टि से भी महत्वपूर्ण हैं। भारत तीव्र शहरीकरण, भूमि उपयोग में परिवर्तन, वनों और पारिस्थितिक तंत्रों पर बढ़ते दबाव और जल संसाधनों पर बढ़ते तनाव की प्रक्रिया से गुजर रहा है। उपग्रह निगरानी का उपयोग दीर्घकालिक वनस्पति परिवर्तन, आर्द्रभूमि, जल निकायों और अन्य पारिस्थितिक तंत्रों की नियमित निगरानी के लिए किया जा सकता है। स्थायी डेटासेट नीति निर्माताओं और शोधकर्ताओं को रुझानों का पता लगाने और पर्यावरण के बारे में अधिक प्रभावी निर्णय लेने में मदद कर सकते हैं। भारत के समुद्री हितों के लिए उपग्रह आधारित अवलोकन का भी अत्यधिक रणनीतिक महत्व है। देश की तटरेखा लंबी है और यह हिंद महासागर क्षेत्र के मध्य में स्थित है, जिसका अर्थ है कि समुद्री पर्यावरण के प्रति जागरूकता बढ़ाना आवश्यक है।

सिर्फ हस्ताक्षर नहीं, अधिकार है साक्षरता

(8 सितंबर अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस पर विशेष आलेख)।

हर वर्ष 8 सितंबर को अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस मनाया जाता है। साक्षर का मतलब होता है - 'पढ़ने-लिखने में सक्षम व्यक्ति।' मतलब यह है कि जो व्यक्ति पढ़ और लिख सकता हो तथा लिखी हुई बात को समझ सकता हो,साक्षर कहलाता है। इस दिवस को मनाने के पीछे मुख्य उद्देश्य शिक्षा और साक्षरता के महत्व के प्रति जागरूकता बढ़ाना है। कोई भी व्यक्ति हो, हर किसी को ज्ञान और सूचना से जोड़ने का माध्यम साक्षरता ही है। जब कोई व्यक्ति साक्षर होता है तो वह शिक्षा के माध्यम से ज्ञान और सूचनाएं प्राप्त कर सकता है और जब व्यक्ति के पास ज्ञान और सूचनाएं होतीं हैं, तो वह व्यक्ति न केवल अपने जीवन को बेहतर ढंग से जी सकता है, बल्कि शिक्षा के माध्यम से सामाजिक और आर्थिक विकास में भी अपना महत्वपूर्ण और अहम् योगदान दे सकता है। सच तो यह है कि आज के युग में प्रत्येक व्यक्ति तक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की पहुंच बहुत ही जरूरी हो गई है, क्यों कि एक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त व्यक्ति ही आज के एआइ तथा डिजिटल युग में डिजिटल साक्षरता, वित्तीय साक्षरता और सूचना की सही पहचान कर सकता है। वास्तव में आज जरूरत इस बात की है कि महिलाओं, बच्चों और वंचित वर्गों को शिक्षा के अवसर उपलब्ध हों।

सुनील कुमार महला,
फ्रीलांस राइटर, कॉलमिस्ट
व युवा साहित्यकार।

शिक्षा का मतलब केवल अक्षर ज्ञान नहीं:-
हमें यह बात अपने जेहन में रखनी चाहिए कि शिक्षा व्यक्ति को केवल और केवल अक्षर ज्ञान ही नहीं देती है, बल्कि यह व्यक्ति विशेष को जीवन में आत्मनिर्भर, अधिक जागरूक और अधिकार-संपन्न भी बनाती है। यदि हमें किसी राष्ट्र को प्रगति के पथ पर अग्रसर करना है तो शिक्षा ही वह अनमोल रत्न है,जो उस राष्ट्र विशेष को प्रगति के पथ पर आगे ले जा सकता है। सरल शब्दों में कहें तो साक्षरता किसी राष्ट्र की प्रगति का पहला कदम है। जिस समाज में हर व्यक्ति पढ़ने, समझने और सही निर्णय लेने में सक्षम होता है, वहां गरीबी, भेदभाव और अज्ञानता को कम करने की संभावनाएं बढ़ती हैं। आज आवश्यकता केवल हर व्यक्ति को साक्षर बनाने की नहीं, बल्कि उसे जीवनोपयोगी, डिजिटल और ज्ञान-आधारित शिक्षा से जोड़ने की है। वास्तव में, एक साक्षर व्यक्ति स्वयं का भविष्य बदलता है और एक साक्षर समाज राष्ट्र का भविष्य बदल देता है।

अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस का इतिहास

इस दिवस के इतिहास की यदि हम यहां पर बात करें तो पाठकों को बताता चलूं कि अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस की शुरुआत यूनेस्को की पहल से हुई। दरअसल, 26 अक्टूबर 1966 को यूनेस्को के 14वें आम सम्मेलन में 8 सितंबर को अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया और इसके बाद पहला अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस 8 सितंबर 1967 को मनाया गया। तब से प्रत्येक वर्ष यह दिवस दुनिया भर में साक्षरता के महत्व और शिक्षा की आवश्यकता को रेखांकित करता है। हालांकि, यह भी विवरण मिलता है कि 1965 में ईरान के तेहरान में आयोजित 'विश्व शिक्षा मंत्रियों का सम्मेलन' में साक्षरता के वैश्विक अभियान का प्रस्ताव रखा गया था। यह भी बहुत कम लोग जानते होंगे कि संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 1990 को आधिकारिक तौर पर अंतरराष्ट्रीय साक्षरता वर्ष घोषित किया था। इसी वर्ष थाईलैंड के जोमटिएन में ऐतिहासिक 'एजुकेशन फॉर ऑल' सम्मेलन हुआ, जिसने आधुनिक वैश्विक प्राथमिक शिक्षा की नींव रखी। यह भी उल्लेखनीय है कि साक्षरता को दीर्घकालिक गति देने के लिए संयुक्त राष्ट्र ने 2003 से 2012 तक एक पूरा दशक साक्षरता के नाम समर्पित किया था, जिसका नारा था- 'साक्षरता एक मुक्ति मार्ग'।

भारत में राष्ट्रीय साक्षरता मिशन

पाठकों को बताता चलूं कि भारत में राष्ट्रीय साक्षरता मिशन की शुरुआत 5 मई 1988 को तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी द्वारा एक सामाजिक अभियान के रूप में की गई थी तथा इसका प्राथमिक लक्ष्य 15 से 35 वर्ष आयु वर्ग के निरक्षर व्यक्तियों को कार्यात्मक साक्षरता प्रदान कर आत्मनिर्भर बनाना था, जिसमें लाखों स्वयंसेवकों को जोड़कर इसे जन-आंदोलन का रूप दिया गया। इसने न केवल अक्षर ज्ञान और बुनियादी गणित सिखाया, बल्कि महिलाओं और वंचित वर्गों में अधिकारों व स्वास्थ्य के प्रति सजगता भी बढ़ाई। बहरहाल, यहां यह उल्लेखनीय है कि भारत में 'राष्ट्रीय साक्षरता मिशन' (1988) से लेकर वर्तमान 'उल्लास - नव भारत साक्षरता कार्यक्रम' 2022-2027 के माध्यम से 15 वर्ष और उससे अधिक आयु के गैर-साक्षरों को बुनियादी साक्षरता और जीवन कौशल से जोड़ा जा रहा है।भारत के संदर्भ में रूचिकर तथ्य है कि 4 फरवरी 1990 को केरल का एर्नाकुलम भारत का पहला 100% पूर्ण साक्षर जिला घोषित किया गया था तथा इस अभियान का नेतृत्व तत्कालीन कलेक्टर के.आर. राजन ने किया था, जिसमें 20,000 से अधिक स्वयंसेवकों ने घर-घर जाकर 1.75 लाख निरक्षर वयस्कों को अक्षर ज्ञान दिया था।

अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस की थीम

बहरहाल, यहां पाठकों को बताता चलूं कि अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस 2026 की थीम/विषय-'लोगों, पृथ्वी और समृद्धि के लिए साक्षरता' रखा गया है। इस थीम का अर्थ यह है कि साक्षरता का मतलब केवल और केवल पढ़ना लिखने से नहीं होता है।बल्कि इसका तात्पर्य ऐसी शिक्षा प्राप्त करना है, जिससे व्यक्ति अपने जीवन को बेहतर बना सके। वह समाज और देश की प्रगति में अपना योगदान दे सके और पर्यावरण की रक्षा के प्रति जागरूक हो सके। याद रखिए कि साक्षर और जागरूक नागरिक ही अपने लिए, समाज के लिए और आने वाली पीढ़ियों के लिए बेहतर भविष्य बना सकते हैं।

अंत में यही कहूंगा कि साक्षरता केवल हस्ताक्षर करने का ही नाम नहीं है, बल्कि यह मानवीय गरिमा, आत्मनिर्णय और सामाजिक चेतना की कुंजी है। वास्तव में, शिक्षा कोई विशेषाधिकार नहीं, बल्कि एक बुनियादी मानवाधिकार है, जो व्यक्ति को अपने अधिकारों, स्वास्थ्य और आजीविका के प्रति सजग बनाता है। आज के तकनीकी युग में साक्षरता का दायरा बुनियादी अक्षर ज्ञान से आगे बढ़कर डिजिटल, वित्तीय और कार्यात्मक दक्षता तक फैल चुका है। जब तक समाज के अंतिम छोर पर खड़े व्यक्ति-विशेषकर महिलाओं और वंचित वर्गों तक ज्ञान और सूचना की सहज पहुँच नहीं बनती, तब तक एक समतामूलक, आत्मनिर्भर और सशक्त राष्ट्र की कल्पना अधूरी ही रहेगी।

रास्ते अब मंजिल तक नहीं, जीवन, स्वास्थ्य और प्रकृति से भी जोड़ेंगे

[राजमार्गों के किनारे बोया जा रहा है सेहत और प्रकृति का भविष्य]

रास्ते अब मंजिल तक नहीं, जीवन, स्वास्थ्य और प्रकृति से भी जोड़ेंगे। सड़कें किसी देश की केवल राहें नहीं, उसके विकास की दिशा भी बताती हैं। भारत में ये अब शहरों और बाजारों को जोड़ने वाले रास्ते भर नहीं रहीं, बल्कि बदलती विकास-दृष्टि की पहचान बन रही हैं। एनएचएआई की 'आरोग्य वन' पहल के तहत राजमार्गों के दोनों ओर नीम, आंवला, जामुन, इमली जैसी औषधीय वृक्ष प्रजातियाँ (और उपयुक्त स्थानों पर तुलसी, अश्वगंधा जैसी वनस्पतियाँ) कतारों में दिखें, तो यह केवल सड़क-सौंदर्य नहीं होगा। यह उस समझ का संकेत होगा कि तेज रफ्तार विकास को भी अंततः हवा, पानी और हरियाली की जरूरत है। सड़क किनारे खड़ा एक छोटा पौधा इसलिए मामूली नहीं—वह उस सोच का प्रतीक है, जिसमें विकास प्रकृति को पीछे छोड़कर नहीं, साथ लेकर आगे बढ़ना चाहता है।

इसे सिर्फ हरियाली की सरकारी कवायद मानना, इसके भीतर छिपे बड़े अर्थ को अनदेखा करना होगा। सड़क किनारे औषधीय पौधों की कतारें एक ऐसी मौन स्वास्थ्य-पट्टी बन सकती हैं, जो बिना कुछ कहे यात्री के मन तक पहुंचे। लंबी यात्रा में धूल, धुआं, शोर और तनाव के बीच तुलसी की सुगंध, नीम की छाया या आंवला-जामुन की हरियाली मन को ठहरने का अहसास दे सकती है। साथ ही, ये पौधे प्रकृति के उस पुराने ज्ञान की याद दिलाएंगे, जिसे आधुनिक जीवन सुविधा की दौड़ में पीछे छोड़ आया है। एक ओर वे कार्बन सोखकर हवा को बेहतर बनाएंगे, दूसरी ओर आयुर्वेद की परंपरा को आधुनिक राजमार्गों से जोड़ेंगे। सड़क और स्वास्थ्य का यह संगम विकास को थोड़ा और मानवीय बना सकता है।

प्रो. आरके जैन
'अरिजीत'
शिक्षाविद् बड़वानी (मप्र)
ईमेल: rtirkjain@gmail.com

किसी योजना की उम्र उसके उद्घाटन से नहीं, उसके निभाए जाने से तय होती है। 'आरोग्य वन' जैसी पहल तभी सचमुच जीवित रहेगी, जब सरकारी फाइलों से निकलकर स्थानीय समाज की जिम्मेदारी बने। राजमार्ग प्राधिकरण अकेले इसे नहीं संभाल सकता; स्थानीय समुदाय, स्वयंसेवी संस्थाएं, आयुष व वन विभाग और प्रशासन को साथ आना होगा। किसानों के लिए औषधीय पौधों की खेती अतिरिक्त आमदनी का द्वार खोल सकती है। स्कूल-कॉलेज के विद्यार्थियों को इनके संरक्षण और पहचान से जोड़ने पर पर्यावरण शिक्षा किताबों से निकलकर मिट्टी तक पहुंचेगी। तब पौधा किसी सरकारी योजना का आंकड़ा नहीं, गांव, किसान, विद्यार्थी और यात्री—सबकी साझा जिम्मेदारी बनेगा।

बड़ी योजनाएं जमीन पर उतरने वाले कदमों से आकार लेती हैं। एनएचएआई की मौजूदा योजना में पहले चरण में टोल प्लाजा और विश्राम स्थलों के पास चुनिंदा भूखंडों पर रोपण हो रहा है। राष्ट्रीय औषधीय पौधा बोर्ड (एनएमपीबी) और आयुष मंत्रालय के अनुभव से हरियाली के साथ औषधीय संसाधन भी तैयार किए जाएं। मॉडल जोन और सेंसर-आधारित सिंचाई उपयोगी हैं, लेकिन सूखे क्षेत्रों में पानी और रखरखाव जरूरी है। स्थानीय वैद्य और आयुर्वेद विशेषज्ञ क्षेत्रानुकूल प्रजातियां तय करें। कच्चे माल को स्थानीय फार्मेसियों और आयुष केंद्रों से जोड़ा जाए। विश्राम स्थलों पर सूचना-पट्ट लगें, ताकि यात्री पौधों का औषधीय महत्व जानें। तब सड़क सफर के साथ ज्ञान का रास्ता भी बनेगी।

राजमार्गों के किनारे पड़ी जमीन विकास की उस कहानी का अनकहा हिस्सा है, जिसे अक्सर कोई पढ़ता ही नहीं। धूल, तपिश, अतिक्रमण और प्रदूषण ने इन पट्टियों को उपेक्षा का भूगोल बना दिया है। औषधीय पौधों की योजनाबद्ध कतारें इसी भूले हुए भूभाग में फिर जीवन भर सकती हैं। घनी हरियाली धूल थामने, तापमान संतुलित करने और मिट्टी बचाने में मदद करेगी। साथ ही, यही वनस्पति पक्षियों, तितलियों और छोटे जीवों के लिए

छोटे-छोटे आश्रय रचेगी। तब राजमार्ग केवल पहियों का गलियारा नहीं रहेगा; वह जैव-विविधता की जीवन-पट्टी भी बन सकेगा। जलवायु परिवर्तन के दौर में ऐसे हरित गलियारे भविष्य की पर्यावरण नीति का अहम आधार बन सकते हैं।

हरियाली का अर्थ तब खुलता है, जब वह जीवन को छूने लगे। इस योजना का महत्वपूर्ण पक्ष स्वास्थ्य है। आधुनिक जीवन ने बीमारी का नया भूगोल रचा है—तनाव, प्रदूषण और बिगड़ती जीवनशैली उसका हिस्सा हैं। ऐसे में औषधीय वनस्पतियों को सजावटी हरियाली मानना भूल होगी। वैज्ञानिक संरक्षण, कटाई और प्रसंस्करण से इनकी सामग्री सस्ती स्वास्थ्य-उपयोगों तक पहुंच सकती है। हालांकि राजमार्ग किनारे प्रदूषण (धूल, वाहन उत्सर्जन) से औषधीय गुणवत्ता प्रभावित हो सकती है, इसलिए कटाई-उपयोग से पहले वैज्ञानिक परीक्षण जरूरी है। ग्रामीण क्षेत्रों में, जहां स्वास्थ्य सुविधाएं दूर हैं, पारंपरिक ज्ञान और स्थानीय वनस्पतियां सहायक हो सकती हैं। लेकिन सावधानी जरूरी है—हर औषधीय पौधा हर व्यक्ति का उपचार नहीं। सही पहचान, वैज्ञानिक परीक्षण और विशेषज्ञ सलाह से ही इसकी संभावना जनहित में बदली जा सकती है।

हर पौधा लग जाने से हरियाली नहीं बनती; उसकी सांसें बची रहें, तभी प्रयास सार्थक है। यही इस योजना की सबसे बड़ी चुनौती है। सरकारी योजनाओं में पौधों की संख्या गिनना आसान है, उनकी जीवित रहने की दर गिनना असली प्रशासनिक कसौटी है। इसलिए सफलता का पैमाना 'कितने पौधे लगाए' नहीं, बल्कि 'कितने बचे, कितने बढ़े और कितना उपयोगी हुए' होना चाहिए। राजमार्ग प्राधिकरण, वन विभाग और स्थानीय प्रशासन की जिम्मेदारियां स्पष्ट हों। नियमित स्वतंत्र मूल्यांकन हो और नष्ट पौधों का पुनरोपण सुनिश्चित किया जाए। स्थानीय लोगों को संरक्षण से जोड़ने के लिए पुरस्कार और प्रोत्साहन मिलें। जवाबदेही जितनी साफ होगी, योजना उतनी ही कागज से निकलकर जमीन पर जड़ पकड़ेगी।

सड़कें जब केवल दूरी नहीं, देश की सोच भी तय करने लगें, तभी विकास का अर्थ व्यापक होता है। राष्ट्रीय राजमार्गों पर औषधीय पौधों की पहल इसी बदलती सोच की अभिव्यक्ति है। राजमार्ग देश की धमनियां हैं तो उनके किनारे उगती हरियाली प्रकृति, स्वास्थ्य और समाज के बीच जीवंत सेतु बन सकती है। इसकी सफलता पौधों की संख्या या सड़क की सुंदरता में नहीं, बल्कि पर्यावरण संरक्षण, किसान की आय, आयुर्वेदिक ज्ञान, जैव-विविधता और स्वास्थ्य-जागरूकता में दिखाई देगी। तब राजमार्ग केवल दूरी घटाने वाली राह नहीं रहेगा—वह देश की यात्रा में जीवन को बेहतर बनाने वाली हरित धारा बन जाएगा।

एक राजस्थान, दो पार्टी, तीन नेता और पंजाब में सत्ता की जंग

राकेश दुबे

राजस्थान के पंजाब में दखल का दिलचस्प संयोग बना है। गुलाबचंद कटारिया पंजाब के राज्यपाल हैं, डॉ. सतीश पूनिया वहां बीजेपी के प्रभारी और सचिन पायलट पंजाब में कांग्रेस के प्रभारी। यानी पंजाब के संवैधानिक शीर्ष पद से लेकर राजनीतिक शीर्ष दलों, बीजेपी और कांग्रेस के चुनावी संगठन तक राजस्थान के तीन राजनीतिक चेहरों की अहम मौजूदगी। विधानसभा चुनाव से पहले राजस्थान के इन तीनों नेताओं की भूमिका एक साथ चर्चा में हैं। तीनों ने राजनीति को सिर्फ सत्ता के गलियारों से नहीं, सत्ता संघर्ष के अनुभवों से जाना है। तीनों 2018 में एक साथ राजस्थान विधानसभा के सदस्य भी रहे। अब वही अनुभव पंजाब की जमीन पर अलग-अलग तरीके से इस्तेमाल होना है।

राजभवन में बैठे राजस्थान के 'भाई साहब' : पंजाब में गुलाबचंद कटारिया की भूमिका, डॉ पूनिया और पायलट से बिल्कुल अलग है। राज्यपाल सीधे राजनीतिक मुकाबले का हिस्सा नहीं होते। लेकिन पंजाब जैसे राजनीतिक रूप से संवेदनशील राज्य में सत्ता साधने और कमजोर बहुमत के वक्त राज्यपाल की भूमिका केवल औपचारिक नहीं रहती। सरकार और राजभवन के बीच संवैधानिक समन्वय, चुनाव से जुड़े संवैधानिक दायित्व और सरकार के गठन जैसी परिस्थितियों में राज्यपाल का पद सबसे महत्वपूर्ण हो जाता है। राजस्थान के पूर्व गृह मंत्री, विधानसभा में विपक्ष के नेता और प्रदेश में पार्टी के अध्यक्ष सहित बीजेपी के संगठनात्मक चेहरे रहे कटारिया ने सत्ता और विपक्ष दोनों को बहुत करीब से देखा है। असम के राज्यपाल रहने के बाद जुलाई 2024 में उन्होंने पंजाब के राज्यपाल और चंडीगढ़ के प्रशासक का पद संभाला। पंजाब में उनकी मौजूदगी इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि वे बीजेपी के रणनीतिकार एवं केंद्रीय अमित शाह के खास आदमी माने जाते हैं तथा चुनावी राजनीति से बाहर होकर भी राज्य की राजनीतिक व संवैधानिक व्यवस्था के महत्वपूर्ण संस्थान के नेतृत्वकर्ता हैं।

पूनिया और पायलट: दोनों की मुश्किल अलग : राजनीति का असली मैदान डॉ. पूनिया और पायलट के सामने है। दोनों अपनी-अपनी पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष रहे और दोनों जिताने - हराने की रणनीति के खिलाड़ी हैं। वरिष्ठ पत्रकार अरविंद चोटिया के मुताबिक पायलट उप मुख्यमंत्री रहे, उसी दौर में पूनिया उप नेता प्रतिपक्ष रहे। राजनीतिक वर्यवेक्षक त्रिभुवन के मुताबिक दिलचस्प यह भी है कि पायलट और पूनिया दोनों अपने-अपने राजनीतिक संसार में 'एसपी' के नाम से जाने जाते हैं। त्रिभुवन कहते हैं कि यह केवल दो नियुक्तियों की कहानी नहीं है। यह दो दलों की दो बिल्कुल अलग बीमारियों के इलाज के लिए भेजे गए दो चिकित्सकों की कहानी है। वे कहते हैं कि कांग्रेस के पास पंजाब में घर है, लेकिन चाबी के दावेदार बहुत हैं। बीजेपी के पास घर का नक्शा है, लेकिन नींव नहीं पड़ी। एक को घर बचाना है, दूसरे को घर बनाना है। राजनीतिक विश्लेषक निरंजन परिहार कहते हैं कि सचिन पायलट कांग्रेस की आंतरिक गुटबाजी, हाईकमान की अनिर्णयशीलता और प्रदेश नेतृत्व की कमजोरियों से खुद भी संघर्ष कर चुके हैं। इसलिए पायलट जानते हैं कि पार्टी के भीतर असंतोष से पैदा हुई समानांतर पार्टियों से कैसे निबटा जाता है।

पूनिया को पंजाब में पार्टी का पराक्रम दिखाना है : सिख पगड़ी धारण करके चुनावी समर में उतर चुके राज्यसभा सांसद डॉ सतीश पूनिया के लिए पंजाब बीजेपी की जिम्मेदारी एक बड़े संगठनात्मक परीक्षण की तरह है। अगस्त 2026 में उन्हें पंजाब बीजेपी का प्रभारी

बनाया गया। हरियाणा में पार्टी के प्रभारी के तौर पर 2024 में बीजेपी की लगातार तीसरी जीत में उनकी भूमिका को पार्टी ने भी सराहा। राजनीतिक विश्लेषक निरंजन परिहार कहते हैं कि हरियाणा के मुकाबले पंजाब में पूनिया के सामने चुनौती बड़ी है। भले ही डॉ पूनिया ने कह दिया है कि बीजेपी पंजाब की सभी 117 विधानसभा सीटों पर चुनाव लड़ने की तैयारी कर रही है। लेकिन फिलहाल 117 में से बीजेपी के केवल 2 विधायक ही हैं। परिहार कहते हैं कि बीते लोकसभा चुनाव में बीजेपी एक भी सांसद नहीं चुना गया, लेकिन वोट शेयर 19 प्रतिशत तक पहुंच गया। मतलब पंजाब का हर 5वां वोटर बीजेपी के साथ है। परिहार के मुताबिक पूनिया की असली परीक्षा इसी वोट को संगठन, स्वीकार्यता और विधानसभा सीटों में बदलने की है।

पायलट के सामने संगठन सहेजने की चुनौती : पायलट की चुनौती अलग है। कांग्रेस ने उन्हें उस पंजाब का प्रभारी बनाया है, जहां पार्टी के पास राजनीतिक आधार तो है, लेकिन संगठनात्मक एकजुटता बड़ी चुनौती है। राजनीतिक विश्लेषक निरंजन परिहार कहते हैं कि पायलट का संसदीय अनुभव अधिक है और चुनावी राजनीति में उनकी राष्ट्रीय पहचान भी बड़ी है। राजस्थान में प्रदेश अध्यक्ष के नाते उनको अपनी पार्टी को सत्ता करीब ले जाने जितना बहुमत लाने का भी अनुभव रहा है। लेकिन वरिष्ठ पत्रकार अरविंद चोटिया कहते हैं कि पंजाब में सचिन पायलट के सामने सबसे बड़ी चुनौती होगी मेंढ़कों को तौलना। चोटिया कहते हैं कि यह काम बहुत मुश्किल है, शायद बहुत ज्यादा मुश्किल है। क्योंकि पायलट के सामने सबसे बड़ा सवाल यही है कि क्या वे पंजाब में कांग्रेस के बिखरे हुए संगठन, नेताओं की आपसी खींचातान और खेमेबाजी के खत्म करके संगठन को चुनावी मशीन में बदल पाएंगे ?

दोनों की मंजिल एक, रास्ते बिल्कुल अलग : यहीं पंजाब की आगामी राजनीति दिलचस्प हो जाती है। डॉ पूनिया को पंजाब में एक ऐसी बीजेपी को विस्तार देना है जो वहां अभी सत्ता की स्वाभाविक दावेदार नहीं है, जबकि पायलट को ऐसी कांग्रेस को एकजुट करना है जिसके पास इतिहास और जनाधार तो है, लेकिन संगठनात्मक अंतर्विरोध भी कम नहीं हैं। राजनीतिक विश्लेषक निरंजन परिहार कहते हैं कि इस लिहाज से अगला पंजाब विधानसभा चुनाव दोनों नेताओं के लिए केवल एक और चुनाव नहीं होगा, यह उनकी राजनीतिक रणनीति, संगठन क्षमता और नेतृत्व की प्रतिष्ठा का इम्तिहान भी होगा। वरिष्ठ राजनीतिक पत्रकार विजय विद्रोही कहते हैं कि बीजेपी पंजाब में अपना आधार विस्तार करना चाहती है और कांग्रेस अपने पुराने जनाधार को फिर से राजनीतिक ताकत में बदलना चाहती है। विद्रोही कहते हैं कि पायलट और डॉ पूनिया, दोनों के सामने फिलहाल आम आदमी पार्टी की सत्ता की ताकतको तोड़ने और अपनी अपनी पार्टियों की राजनीतिक जमीन के पुनर्गठन का भी है।

पांच राज्यों की 6 सीटों पर उपचुनाव का ऐलान

6 अक्टूबर को वोटिंग, 9 अक्टूबर आएंगे नतीजे

चुनाव आयोग ने देश की 6 सीटों पर उपचुनाव की तारीखों का ऐलान कर दिया है. 4 राज्यों और एक केंद्र शासित प्रदेश की 5 विधानसभा सीटों तथा 1 लोकसभा सीट पर 6 अक्टूबर 2026 को वोटिंग होगी, जबकि मतगणना 9 अक्टूबर को कराई जाएगी. ये सभी सीटें विधायकों और सांसदों के इस्तीफे की वजह से खाली हुई थीं

इन सीटों पर होंगे उपचुनाव

विधानसभा सीटें:
मदुरंतकम (तमिलनाडु)
धारापुरम (तमिलनाडु)
थट्टांचावडी (पुडुचेरी)
रेजीनगर (पश्चिम बंगाल)
नंदीग्राम (पश्चिम बंगाल)
लोकसभा सीट: नौगांव (असम)
उपचुनाव का पूरा शेड्यूल
नॉटिफिकेशन जारी होने की तिथि: 09 सितंबर 2026
नामांकन की अंतिम तिथि: 16 सितंबर 2026
नामांकन पत्रों की जांच: 17 सितंबर 2026
नाम वापसी की अंतिम तिथि: 19 सितंबर 2026
मतदान की तिथि: 06 अक्तूबर 2026
मतगणना की तिथि: 09 अक्तूबर 2026
चुनाव प्रक्रिया पूरी होने की तिथि: 11 अक्तूबर 2026

क्यों हो रहे उपचुनाव ?

इन सभी 6 सीटों पर संबंधित जनप्रतिनिधियों के इस्तीफे के बाद उपचुनाव कराए जा रहे हैं. असम की नगांव लोकसभा सीट से सांसद प्रद्युत बोरदोलोई के इस्तीफे के बाद वहां उपचुनाव हो रहे हैं। इसके अलावा अन्य पांच विधानसभा सीटों पर भी विधायकों ने इस्तीफा दिया है। तमिलनाडु की मदुरंतकम सीट पर विधायक मरागथम कुमारवेल और धारापुरम से पी. सत्यभामा ने इस्तीफा दिया था. वहीं पश्चिम बंगाल की रेजीनगर से विधायक हुमायूं कबीर और नंदीग्राम से सीएम सुवेंदु अधिकारी ने इस्तीफा दिया था। इसके अलावा पुडुचेरी की थट्टनचावडी सीट से विधायक एन. रंगासामी ने इस्तीफा दिया।

मौत की इमारतें: कब थमेगा भ्रष्टाचार और लापरवाही का यह जानलेवा खेल?

अशोक भाटिया,
वरिष्ठ स्वतंत्र पत्रकार ,लेखक, समीक्षक एवं टिप्पणीकार
वसई पूर्व - 401208 (मुंबई)
E MAIL - vasairoad.yatrisangh@gmail.com
व्हाट्स एप्प 9221232130

इसके साथ ही, आज के इस आधुनिक युग में जब हमारे पास सैटेलाइट इमेजरी, ड्रोन तकनीक और जीआईएस मैपिंग जैसे उन्नत साधन मौजूद हैं, तो अवैध निर्माणों की निगरानी मानवीय भरोसे पर क्यों छोड़ी जाए? हर शहर के मास्टर प्लान को डिजिटल किया जाना चाहिए और किसी भी नए निर्माण या स्वीकृत नक्शे से इतर होने वाले बदलाव को ड्रोन कैमरों के जरिए ट्रैक किया जाना चाहिए। जैसे ही कोई अवैध मंजिल खड़ी हो, सिस्टम में ऑटोमैटिक अलर्ट जनरेट होना चाहिए ताकि भ्रष्टाचार की गुंजाइश को पूरी तरह खत्म किया जा सके। महानगरों की बढ़ती आबादी और जमीन की कमी निश्चित रूप से एक बड़ी चुनौती है, लेकिन इसका समाधान इंसानी जिंदगियों की कीमत पर कंक्रीट के अवैध डेथ-ट्रैप बनाना नहीं हो सकता। यदि हम अब भी नहीं संभले और सत्य निकेतन जैसी त्रासदियों से कोई सबक नहीं लिया, तो देश के कोने-कोने से 'मौत की इमारतों' के गिरने और चीख-पुकार उठने का यह सिलसिला कभी बंद नहीं होगा। विकास की ऊंची-ऊंची बातें तब तक बेमानी हैं, जब तक कि हम अपने नागरिकों को एक सुरक्षित छत और एक सुरक्षित जीवन देने की बुनियादी गारंटी नहीं दे सकते। यह समय खोखली संवेदनाओं का नहीं, बल्कि व्यवस्था की इस सड़न पर एक कड़ा और अंतिम प्रहार करने का है।

दिल्ली के सत्य निकेतन इलाके में एक पांच मंजिला इमारत का ताश के पत्तों की तरह ढह जाना और मलबे में दबकर छह बेगुनाह जिंदगियों का असमय खत्म हो जाना महज़ एक आकस्मिक हादसा नहीं है, बल्कि यह हमारे देश के महानगरीय विकास के खोखलेपन और प्रशासनिक तंत्र के सड़ चुके ढांचे की एक और खौफनाक बानगी है। हर ऐसे हादसे के बाद सरकारी अमला कुंभकर्णी नींद से जागता है, कुछ मुआवजे की घोषणाएं होती हैं, एक जांच समिति का गठन कर दिया जाता है, और कुछ दिनों बाद सब कुछ सामान्य मानकर फिर से उसी ढर्रे पर लौट आता है। लेकिन बुनियादी सवाल वहीं का वहीं खड़ा है कि आखिर कब तक देश के नागरिक चंद पैसों के भूखे बिल्डरों और भ्रष्ट अधिकारियों के इस जानलेवा गठजोड़ की वेदी पर अपनी जान की आहुति देते रहेंगे? आखिर कब तक हमारे शहरों में खड़ी अवैध और जर्जर इमारतें 'मौत की इमारतें' बनकर मासूमों को निगलती रहेंगी? सत्य निकेतन की वह इमारत, जिसे नगर निगम के दस्तावेजों में केवल दो मंजिलों की अनुमति मिली थी, वह कैसे अधिकारियों की नाक के नीचे पांच मंजिला कंक्रीट का टावर बन गई और कैसे उसमें सैकड़ों छात्रों को भेड़-बकरियों की तरह पीजी के रूप में रहने के लिए झोंक दिया गया, यह अपने आप में एक बड़ा प्रशासनिक अपराध है।

यह त्रासदी किसी एक शहर या एक खास इलाके की बानगी नहीं है, बल्कि आज पूरे भारत के महानगरों और तेजी से विकसित हो रहे शहरों की यही कड़वी और डरावनी हकीकत है। यदि हम देश के अन्य हिस्सों पर नजर डालें, तो पाएंगे कि 'मौत की इमारतों' का यह जाल कश्मीर से कन्याकुमारी तक फैला हुआ है। देश की आर्थिक राजधानी मुंबई और उससे सटे ठाणे, कल्याण तथा मुंब्रा जैसे इलाकों का उदाहरण हमारे सामने है, जहां हर साल मॉनसून की पहली बारिश के साथ ही इमारतों के गिरने का सिलसिला शुरू हो जाता है। मुंबई की पुरानी चालें और संकरी गलियों में खड़ी अवैध बहुमंजिला इमारतें दशकों से मौत का इंतजार कर रही हैं। वहां कानूनी पचड़ों, मकान मालिक और किराएदारों के विवादों और नगर निगम की ढीली कार्यप्रणाली के कारण सैकड़ों ऐसी इमारतें आज भी वैसी ही खड़ी हैं, जिन्हें बहुत पहले ही रहने के लिए असुरक्षित घोषित किया जा चुका है।

लोग अपनी जान हथेली पर रखकर वहां रहने को मजबूर हैं क्योंकि महानगर की बेतहाशा महंगाई ने उन्हें विकल्पहीन बना दिया है। इसी तरह, देश के सबसे आधुनिक और हाई-टेक शहरों में शुमार किए जाने वाले दिल्ली-एनसीआर के गुरुग्राम और नोएडा जैसे इलाकों की स्थिति भी कोई बहुत बेहतर नहीं है। जहां एक तरफ गगनचुंबी सोसायटियां और शीशे की चमचमाती दीवारें प्रगति का ढोल पीटती हैं, वहीं दूसरी तरफ इनके भीतर का सच बेहद भयावह है। हाल के वर्षों में गुरुग्राम और नोएडा की कई पॉश सोसायटियों में निर्माण की बेहद घटिया गुणवत्ता के कारण कभी छतों के प्लास्टर गिर रहे हैं, तो कभी लिफ्ट शाफ्ट ढह रहे हैं, और कभी पूरी की पूरी बालकनी नीचे आ गिरती है। यह इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि बहुराष्ट्रीय कंपनियों के दफ्तरों से घिरे इन हाई-टेक शहरों में भी बिल्डर माफिया ने मुनाफाखोरी के चक्कर में इंसानी जान की कीमत को शून्य बना दिया है। रेरा जैसे कानूनों के आने के बावजूद, कागजी औपचारिकताओं को तो पूरा कर लिया जाता है, लेकिन धरातल पर जो कंक्रीट और लोहा इस्तेमाल हो रहा है, उसकी मजबूती पर हमेशा एक बड़ा सवालिया निशान लगा रहता है।

यदि हम दक्षिण भारत के प्रमुख तकनीकी केंद्र बेंगलुरु की बात करें, तो वहां का परिदृश्य और भी चिंताजनक है। बेंगलुरु जो कभी अपने बगीचों और शांत वातावरण के लिए जाना जाता था, आज अनियंत्रित कंक्रीट के जंगल में तब्दील हो चुका है। वहां के कतिपय रिहायशी इलाकों में बिना किसी सॉयल टेस्टिंग (मिट्टी की जांच) के और बिना पर्याप्त पिलर या बेस फाउंडेशन के, रातों-रात चार से पांच मंजिला इमारतें खड़ी कर दी जाती हैं। दलदली जमीनों और सूखे तालाबों के कैचमेंट एरिया पर बनी ये अवैध इमारतें अक्सर जरा सी बारिश या मामूली भू-धंसाव के कारण एक तरफ झुक जाती हैं, जिन्हें बाद में प्रशासन को आनन-फानन में ढहाना पड़ता है। आईटी हब की इस चकाचौंध के पीछे छिपा यह अंधाधुंध और गैर-कानूनी निर्माण किसी भी दिन एक बहुत बड़ी त्रासदी को आमंत्रण दे रहा है।

पूरब की ओर रुख करें, तो कोलकाता और चेन्नई जैसे ऐतिहासिक महानगरों में समस्या का एक दूसरा पहलू सामने आता है। यहां 'विरासत' और 'पुराने कानूनी विवादों' के नाम पर दशकों, बल्कि सदियों पुरानी जर्जर इमारतें खड़ी हैं, जिनके मालिक या तो देश छोड़कर जा चुके हैं या फिर किराएदारों के साथ दशकों से कोर्ट कचहरी के चक्कर काट रहे हैं। इन इमारतों की मरम्मत कराने वाला कोई नहीं है, और नगर निगम इन्हें केवल 'खतरनाक' का एक नोटिस चपकाकर अपनी जिम्मेदारी से इतिश्री कर लेता है। जब ये इमारतें ढहती हैं और इनके मलबे में दबकर गरीब मजदूर या फुटपाथ पर सोने वाले लोग मरते हैं, तो फाइलें बंद कर दी जाती हैं।

इस पूरे संकट के मूल में जो सबसे बड़ी समस्या है, वह है बिल्डर-माफिया, स्थानीय प्रशासन और पुलिस का वह अपवित्र और अटूट त्रिकोण, जो हर अवैध निर्माण को संरक्षण देता है। कोई भी अवैध इमारत रातों-रात या छिपकर नहीं बनती। कंक्रीट के मिक्सर ट्रक, लोहे की छड़ें और दर्जनों मजदूर दिन-दहाड़े सड़क पर काम करते हैं। स्थानीय बीट कांस्टेबल से लेकर नगर निगम के जूनियर इंजीनियर और क्षेत्रीय अधिकारियों तक, सबको इस बात की पूरी जानकारी होती है कि कहां और किस नियम को तोड़ा जा रहा है। लेकिन रिश्वतखोरी और भ्रष्टाचार की जो व्यवस्था हमारे सिस्टम में नीचे से ऊपर तक पैठी हुई है, वह इन अधिकारियों की आंखों पर पट्टी बांध देती है। जब तक इमारत बनकर खड़ी नहीं हो जाती और बिल्डर अपना मुनाफा कमाकर गायब नहीं हो जाता, तब तक प्रशासन मूकदर्शक बना रहता है। और जब कोई सत्य निकेतन जैसा हादसा होता है, तो सारा ठीकरा प्राकृतिक आपदा या केवल मकान मालिक के सिर फोड़कर असली गुनाहगार अधिकारी साफ बच निकलते हैं।

शांति अशांति के बीच झूलती वैश्विक युद्ध की आशंका और परिणति

अमेरिका ईरान इजरायल युद्ध के बीच शांति वार्ता युद्ध के तैयारी के लिए समय समय पैदा करने की युति से ज्यादा कुछ नहींद्य अमेरिका युद्ध विराम को सिर्फ इसलिए आगे बढ़ते जा रहे हैं कि उन्हें अपनी तैयारी के लिए और समय चाहिए वैसे ईरान भी पूरी तरह से कंगाली के दौर से गुजर रहा है अब उसे युद्ध बढ़ाने के लिए समय चाहिए इन परिस्थितियों में ऐसा नहीं लगता की तीनों में से कोई देश शांति चाहता हो सब अपनी अपनी महत्वाकांक्षा और विस्तार नीति पर अड़े हुए हैंद्य परिणाम स्वरुप पूरा विश्व वैश्विक युद्ध की आशंका और उसके होने वाले परिणामों से भयभीत दिखाई दे रहा हैद्य

वैश्विक परिदृश्य एक ऐसे मोड़ पर खड़ा दिखाई देता है, जहाँ कूटनीति की भाषा कमजोर और शक्ति-प्रदर्शन की भाषा प्रबल होती जा रही है। पश्चिम एशिया में बढ़ता तनाव विशेष रूप से अमेरिका, इज़रायल और ईरान के बीच, विश्व को एक संभावित महायुद्ध यहाँ तक कि परमाणु युद्ध की आशंका की ओर धकेल रहा है। इस संपूर्ण घटनाक्रम में डोनाल्ड ट्रंप की नीतियाँ और उनके निर्णय भी चर्चा के केंद्र में हैं, जिन्हें लेकर विश्व स्तर पर विभिन्न प्रकार की प्रतिक्रियाएँ सामने आई हैं। उनके द्वारा लिए जा रहे निर्णय पर अमेरिका के नागरिक उनके संसद सदस्य और वैश्विक देश के नेताओं द्वारा भी अविश्वास प्रकट किया जा रहा है उनकी मानसिक स्थिति पर भी अब सवालिया निशान लगने लगे हैं।

ऐतिहासिक तौर पर देखा जाए तो शांति वार्ताओं का उद्देश्य सदैव संघर्ष को समाप्त कर स्थिरता स्थापित करना होता है, किंतु हालिया प्रयासों में यह उद्देश्य बिखरता हुआ प्रतीत हो रहा है। जब मध्यस्थता के लिए पाकिस्तान जैसे कमजोर,आतंकवादी और अपरिपक्व मानसिकता वाले देश को आगे किया गया, तब ही कई कूटनीतिक विश्लेषकों ने इसकी निष्पक्षता और प्रभावशीलता पर प्रश्नचिह्न लगा दिया था। किसी भी शांति प्रक्रिया की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि मध्यस्थ देश निष्पक्ष, विश्वसनीय और सभी पक्षों के लिए स्वीकार्य हो। यदि मध्यस्थ ही अपने रणनीतिक हितों में उलझा हो, तो वार्ता का मार्ग स्वत: ही संदिग्ध हो जाता है।

अमेरिका और इज़रायल का दृष्टिकोण ईरान की परमाणु क्षमताओं को सीमित करने पर केंद्रित रहा है, जबकि ईरान अपनी संप्रभुता और सुरक्षा के अधिकारों का सदैव पक्षकार रहा है। ईरान का कहना है कि उसका परमाणु कार्यक्रम शांति और ऊर्जा के उद्देश्य से है, परंतु पश्चिमी देशों को इसमें संभावित सैन्य उपयोग की आशंका दिखाई देती है। यही अविश्वास शांति वार्ता को बार-बार विफल करता रहा है।

अमेरिका द्वारा ईरान के प्रस्तावों को अस्वीकार करना इस बात का संकेत है कि दोनों पक्षों के बीच संवाद की खाई गहरी होती जा रही है। इज़रायल, जो पहले से ही ईरान को कई वर्षों से अपने अस्तित्व के लिए खतरा मानता है, और उसके लिए यह लड़ाई अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण भी है और वह किसी भी प्रकार के समझौते को लेकर अत्यंत सावधान और अतिरिक्त सतर्क है। ऐसे में जब तीनों शक्तियाँ अपने-अपने हितों की रक्षा के लिए किसी भी हद तक अड़े हुए और अडिग हों, तो शांति का मार्ग और भी ना मुमकिन सा होता दिखाई देता है।

यदि यह तनाव आगे बढ़कर जैसा की युद्ध विश्लेषक आशंका जाता रहे हैं परमाणु संघर्ष में परिवर्तित होता है, तो इसके परिणाम न केवल अत्यंत भयानक तथा विनाशक होने की संभावना होगी बल्कि युद्ध क्षेत्र भी सीमित नहीं रहेंगे, पूरी दुनिया इसकी जद और बड़े प्रभाव में आ जाएगी। सबसे पहले असर वैश्विक अर्थव्यवस्था पर पड़ेगा। तेल उत्पादक क्षेत्र होने के कारण पश्चिम एशिया में युद्ध छिड़ने से कच्चे तेल की कीमतों में भारी उछाल आएगा, जिससे महंगाई वैश्विक स्तर पर बेकाबू हो जाएगी। भारत जैसे विकासशील देशों के लिए यह स्थिति और भी गंभीर हो सकती है, जहाँ पहले से ही आम जनता महंगाई के दबाव से जूझ रही है।

महंगाई का सीधा असर आम जीवन पर पड़ता है।खाद्य पदार्थ, ईंधन, परिवहन, दवाइयाँ सभी की कीमतें आसमान छूने लगती हैं। इससे निम्न और मध्यम वर्ग सबसे अधिक प्रभावित होगा ह। रोजगार के अवसर कम हो जाते हैं, और आर्थिक असमानता बढ़ जाती है।

स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी परमाणु युद्ध के दुष्परिणाम अत्यंत भयावह होंगे। परमाणु विस्फोट से निकलने वाला विकिरण न केवल तत्काल जनहानि करता है, बल्कि पीढ़ियों तक चलने वाली बीमारियों को जन्म देता है। कैंसर, जन्मजात विकृतियाँ, मानसिक रोग ये सब ऐसे प्रभाव हैं जो दशकों तक मानवता को झेलने पड़ते हैं। पर्यावरण पर इसका असर भी विनाशकारी होता है,जल, वायु और मिट्टी सभी प्रदूषित हो जाते हैं, जिससे कृषि उत्पादन ठप हो सकता है और खाद्य संकट उत्पन्न हो सकता है। इसके अतिरिक्त, एक परमाणु युद्ध 'न्यूक्लियर विंटर' जैसी स्थिति भी पैदा कर सकता है, जिसमें धूल और धुएँ के कारण सूर्य का प्रकाश धरती तक नहीं पहुँच पाता, जिससे वैश्विक तापमान में भारी गिरावट आ सकती है। इसका परिणाम व्यापक अकाल और पारिस्थितिक असंतुलन के रूप में सामने आएगा।

वर्तमान स्थिति में सबसे अधिक आवश्यकता संयम, संवाद और विवेकपूर्ण नेतृत्व की है। विश्व शक्तियों को यह समझना होगा कि युद्ध किसी समस्या का समाधान नहीं, बल्कि नई समस्याओं की शुरुआत है। कूटनीति की मेज पर बैठकर मतभेदों को सुलझाना ही एकमात्र स्थायी मार्ग है।

अंतत:, यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि आज मानवता एक ऐसे दोराहे पर खड़ी है, जहाँ एक ओर शांति, सहयोग और विकास का मार्ग है, तो दूसरी ओर विनाश, अराजकता और अंधकार का। निर्णय विश्व नेताओं के हाथ में है, परंतु परिणाम पूरी मानवता को भुगतना होगा। इसलिए यह आवश्यक है कि शांति को प्राथमिकता दी जाए और विश्व को एक और महायुद्ध की विभीषिका से बचाया जाए।

कविता,
संजीव-नी।
चलिए स्वयं की खोज में।
क्या कभी आपने
अपने आप को
खुद में पहचानने,
खोजने की कोशिश की है,
उस सच की तलाश की है,
जो आपके अंदर
सदियों से समाया हुआ है,
आपके मन में
तिल तिल कर जिंदा है
आप के मनोभावों के साथ
बाहर आना चाहता हो,
आपने अंदर के मासूम बच्चे
को महसूस करने की कोशिश की है।
आप कभी यूं ही बेवजह
मुस्कुराये,
खिलखिलाये है,
रोज एक नया मुखौटा लेकर
एक नए-नए पलों को
जीते चले जा रहे हैं,
जिंदगी के सच का
सामना नहीं कर सकते ,
वही सच जो आपको
वर्तमान का आईना
भी दिखाता है,
आप भागते हैं कड़वी
सच्चाईयों से,
और निकल पड़ते हैं,
नए चेहरे की तलाश में
जो आने वाले कालचक्र में
आपको नया मुखौटा देगा
और अंदर की सच्चाई से
दूर और दूर ले जाएगा,
बेवजह अनासक्त,
चलो किसी नन्हे मासूम की
भोली मुस्कान में खो जाते हैं,
जिंदगी के बहुत नजदीक ।

संजीव ठाकुर,
रायपुर, छत्तीसगढ़,
9009 415 415,

सदस्यता फार्म

राजस्थान की आवाज...
राजस्थान दर्शन
हिन्दी मासिक पत्रिका

प्रधान कार्यालय

A-11, प्रथम मंजिल, करधनी शोपिंग सेन्टर, हरि मार्ग,
मालवीय नगर, जयपुर-302017
फोन.: 0141-2521000, मो.: 9413840652-53
7737275324, 9667669888
E-mail: rajasthandarshanpartika@gmail.com

मैं राजस्थान दर्शन पत्रिका का निम्न अवधि के लिए सदस्य बनना चाहता/चाहती हूँ।

अवधि	शुल्क
वार्षिक	540/-
5 वर्ष	2500/-
10 वर्ष	5100/-
आजीवन	10,000/-

नाम ....
पता ....
....
....
फोन (निवास)..
(ऑफिस)..
मोबाइल ....
ई-मेल ....
वेबसाइट ....
....
मै मैसर्स ....
राजस्थान दर्शन हिन्दी मासिक पत्रिका का वार्षिक/पांच वर्ष/दस वर्ष के लिए सदस्य बनना चाहता हूँ। नकद अथवा चैक/डी.डी.नं.
....
अदाकर्ता बैंक ....
दिनांक .... रू. का संलग्न है।

वास्ते अधिकृत हस्ताक्षर (मय सील)
कृपया चैक/डी.डी. ''राजस्थान दर्शन'' के नाम से बनावें।

विज्ञापन दरें

राजस्थान की आवाज...
राजस्थान दर्शन
हिन्दी मासिक पत्रिका

प्रधान कार्यालय

A-11, प्रथम मंजिल, करधनी शोपिंग सेन्टर, हरि मार्ग,
मालवीय नगर, जयपुर-302017
फोन.: 0141-2521000, मो.: 9413840652-53
7737275324, 9667669888
E-mail: rajasthandarshanpartika@gmail.com

विज्ञापन दरें

अंतिम कवर मल्टी कलर	51,000/-
दूसरा कवर मल्टी कलर	20,000/-
पूर्ण पृष्ठ मल्टी कलर	15,000/-
आधा पृष्ठ मल्टी कलर	8,000/-
पूर्ण पृष्ठ श्याम श्वेत कलर	10,000/-
आधा पृष्ठ श्याम श्वेत कलर	6,000/-
एक चाथाई पृष्ठ श्याम श्वेत	3000/-

मैं ....अपनी फर्म मैसर्स .... का विज्ञापन राजस्थान दर्शन हिन्दी मासिक पत्रिका में साईज .... के लिये देना चाहता हूँ। नकद अथवा चैक/डि.डी.नं. ....
अदाकर्ता बैंक ....
दिनांक ....राशि ....
रूपये का संलग्न है।

वास्ते अधिकृत हस्ताक्षर (मय सील)
कृपया चैक/डी.डी. ''राजस्थान दर्शन'' के नाम से बनावें।

राजस्थान दर्शन का आगामी अंक दीपावली विशेषांक

सभी पाठकों एवं विज्ञापनदाताओं से निवेदन है कि अक्टूबर-नवंबर माह में दीपावली विशेषांक का संयुक्तांक प्रकाशित होगा जो अत्यन्त सुन्दर एवं आकर्षक होगा।

राजस्थान दर्शन दीपावली विशेषांक की हजारों प्रतियां प्रकाशित की जाएंगी जो गांव-गांव, ढाणी-ढाणी में वितरित कि जाएगी।

पाठक आज दीपावली शुभकामनां विज्ञापन बुक करवा सकते है। इसमें पहले आयो पहले पाओं वाला ऑफर होगा। आज ही अपनी विज्ञापन सामग्री के साथ, ऑनलाईन अपना स्थान सुरक्षित करवा लें।

नोटः- एम.ओ., ड्राफ्ट एवं चेक राजस्थान दर्शन के नाम से भेजें।
सम्पर्क :- 9166693566, 9413840652

रजि. क्रमांक : पाली/59/2009-10L | श्री आईमाताय नमः | श्री जैकलनाथाय नमः

श्री जैकलजी आई माता सेवा समिति

नारलाई, जिला- पाली (राजस्थान)

की ओर से

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

श्री जति भगा बाबाजी
चेला वैना बाबाजी सिरवी
अध्यक्ष
(नारलाई), मो. 9414391476

जगाराम उदाजी सोलंकी
उपाध्यक्ष
नाडोल, मो. 9423005299

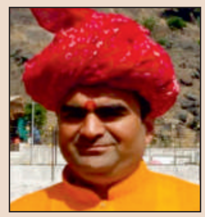

अमरचंद भोलाराम जी सेप्टा
उपाध्यक्ष
दादई, मो. 9892350113

खिमराजजी हकारामजी वरपा
कोषाध्यक्ष
गुड़ा पृथ्वीराज, मो. 9892133075

फूलाबाबाजी (भवर महाराज)
चेला श्री जति भागाबाबाजी सिरवी
उपाध्यक्ष
(नारलाई)

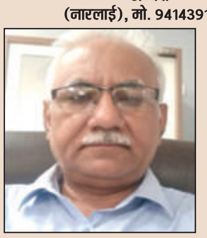

धन्नाराम हकारामजी गेहलोत
सहकोषाध्यक्ष
बाली, मो. 9322267576

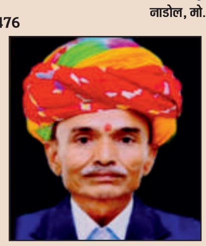

गणपतलाल चिमनारामजी वर्फा
सचिव
बाबागांव, बाली मो. 9828936874

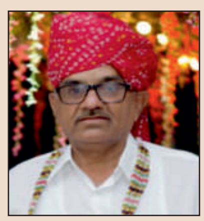

राणाराम मूलाराम भायल
सहसचिव
पड़ासला खुर्द (रानी) पाली, मो. 9983326898

हीरालाल राजारामजी परिहार
सदस्य
ढालोप, मो. 9136979218

पृथ्वीसिंह श्री लक्ष्मणजी सोलंकी
सदस्य
कोटलियाखेडी, मो. 9926527064

डॉ. दिनेश श्री श्यामाजी सतपुड़ा
सदस्य
एमपी, मो. 9425460185

रेखा हिम्मत सोलंकी
सदस्य
देसूरी, पाली, मो. 8291406593

पुनाराम तेजारामजी सोलंकी
सदस्य
देसूरी, मो. 9785110550

लक्ष्मी दिनेश परमार
सदस्य
ढोला, मो. 9660833759

इंदू मुकेश गेहलात
सदस्य
बाली, मो. 7726097035

ताराचंद रामाजी होम्बड़
सदस्य
खारेड़ा, मो. 9987941111

घीसाराम रताराम‌जी लचेटा
सदस्य
बिजोवा, मो. 9887858982

पन्नालाल सुजारामजी सोलंकी
सदस्य
इंद्रोका की ढाणी, मो. 9460442977

गजेसिंह इन्द्रसिंह राठौड़
सदस्य
बिलाडा, मो. 9460686265

पुखराज मांगीलालजी मुलेवा
सदस्य
कुशालपुरा, मो. 9886415666

सुरेशकुमार दलारामजी मुलेवा
सदस्य
पिपलिया कलां, मो. 8453639581

ओटाराम बदाजी परिहार
सदस्य
नारलाई, मो. 9423364738

जगदीश इंदारामजी सोलंकी
सदस्य
नारलाई, मो. 9422659271

कूपाराम पूनारामजी गहलोत
सदस्य
बाली, (पाली), मो. 91583702333

पेमाराम मोटाजी सोलंकी
सदस्य
कोटड़ी, मो. 9323737976

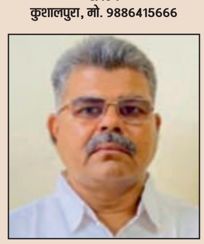

मोतीलाल वेलाजी परमार
सदस्य
वारा सोलंकीयान, मो. 9351997808

डॉ. कालुराम श्री गिरधारीलालजी सेणचा
सदस्य, मो. 9762008402
बगड़ी नगर (बेरा- बंदिया जालिया),

वगताराम चेनाजी कोग
सदस्य
नारलाई, मो. 9427186736

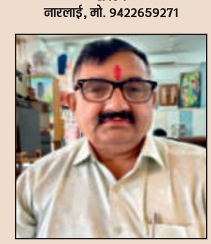

लालाराम लुम्बाजी परमार
सदस्य
नारलाई, मो. 9321212183

डाक प्रेषण तिथि: प्रत्येक माह की 2 तारीख
RNI No.- RAJHIN/2013/52435
डाक पंजीकरण संख्या : Jaipur City/414/2022-24

प्रकाशन तिथि : 01 सितंबर, 2026
पृष्ठ संख्या : 40

जय बाबारी   श्री गणेशाय नमः   ॐ नमः शिवाय

श्री बाबा रामदेवीजी खन्दरा का वार्षिक मेला

भावभरा आमंत्रण

श्री बाबा रामदेवजी भादरवा सुदी दूज (बीज) का वार्षिक मेला

दिनांक 13 सितंबर 2026 रविवार

महाआरती
दिनांक 13.09.2026 रविवार
प्रात: 800 बजे से

ध्वजारोहण
दिनांक 13.09.2026 रविवार
प्रात: 800 बजे से

महाप्रसादी
दिनांक 13.09.2026 रविवार
प्रात: 900 बजे से

कार्यक्रम स्थल | श्री बाबा रामदेवजी मठ, खन्दरा तह-शिवगंज, सिरोही (राज.)

निवेदक | महंत श्री श्री 1008 श्री रामनाथजी महाराज व समस्त ग्रामवासी, खन्दराएवं समस्त भक्तगण

परम पूज्य ब्रह्मलीन महंत श्री श्री 1008
श्री पिताम्बरनाथजी (पोमजी) महाराज

गादीपति महंत श्री श्री 1008
श्री रामनाथजी महाराज, मठाधीश

महाप्रसादी के लाभार्थी

श्री मती शैल कँवर धर्मपत्नि श्री विजयसिंह जी राठौड़ ठिकाणा- जाखोड़ा जवाई रॉयल होटल, जवाई बांध

सभी भक्तजन सपरिवार सादर आंमत्रित हैं।

प्रतिष्ठा में ....
....
....

राजस्थान की आवाज ...
राजस्थान दर्शन
पता न मिलने पर पुनः इस पते पर भेजे
प्रधान कार्यालयः ए-11, प्रथम मंजिल,
करधनी शॉपिंग सेन्टर, मालवीय नगर, जयपुर-302017
फोन नं. : 0141-4819957